यादें

संपादक : सिद्धेश्वर

यादें

स्व० भोला प्रसाद सिंह 'तोमर'

की

स्मृति में

सहकारिता के आधार पर प्रकाशित

काव्य-संग्रह

संपादक

सिद्धेश्वर

प्रकाशक

राष्ट्रीय विचार मंच

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना - 1, दूरभाष : 228519

प्रकाशक
राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 (बिहार)
दूरभाष : 228519

प्रथम संस्करण : 1997

स्वत्वाधिकार : राष्ट्रीय विचार मंच

मूल्य : पचीस रूपये मात्र

कम्पोजर :
कोरल कम्प्युटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना-1, फोन : 231708

•

मुद्रक :
वैशाली प्रिन्टर्स
श्रीकृष्णापुरी, पटना-1, फोन : 220568

AAYDEIN Collection of Poems edited by Sidheshwar
and published by Rashtriya Vichar Manch

अपनी बात आप से

समय और परिस्थिति के अनुरूप आज आवश्यकता इस बात की है कि कविता को जन-सामान्य की वैचारिकता और अनुभूति के समानान्तर यात्रा के योग्य बनाए रखा जाय और उन छद्म-प्रयोगवादी रचनाकारों से अलग रखा जाय क्योंकि वे दुरूहता और जटिलता की आयातित शैम्पेन में मौज-मस्ती करते हैं और साहित्य के एक नए अभिजात्य की सृष्टि करते हैं।

मुझे खुशी इस बात है कि राष्ट्रीय विचार मंच ने अपने प्रथम प्रयास में उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए सहकारिता के आधार पर एक काव्य-संग्रह प्रकाशित कर 'जहाँ चाह वहाँ राह' का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। मंच के सक्रिय सदस्य स्व० भोला प्र० सिंह 'तोमर' के निधन के तुरत बाद ही उनकी स्मृति में एक काव्य-संकलन प्रकाशित करने का कार्यक्रम मंच की कार्यकारिणी ने बनाया था और उसमें नई प्राणवायु से उर्जावान, नये आयामों की तलाश करती बिना लाग-लपेट के अपने शब्द-छन्द-बिम्ब और लय देकर आम आदमी की चेतना को उत्प्रेरित करने का प्रयास किया। यह सृजन की उस अदम्य लालसा से प्रेरित है जो निन्दा-सराहना, देखी-अनदेखी, सुनी-अनसुनी स निरपेक्ष है। इसके सामने मूल्यांकन होना, न होना बहुत बड़ी बात नहीं है। यह हमारे आज के साहित्य-संसार की जरूरत है।

यह शुभ अवसर मंच से जुड़े उन रचनाकारों को मिला है जिनकी स्व० तोमर से निकटता थी। इस रचनाकार बिरादरी के लिए विषय-वस्तु का अभाव न तो आज है और न कल था। भाव, भाषा, शिल्प और शैली का अशेष भण्डार नि:शेष कहाँ हुआ है भला ? जरूरत है केवल उसे ढूंढ़ निकालने की, उसे महसूसने की। हमारी संवेदना के दरवाजों पर विरूचि और विरूपता के कवच पहने खुर्दरे और बेडौल यथार्थ की चट्टानें यदि खड़ी हैं तो उन्हें इच्छित आकार देने और सही ठिकानों पर स्थापित करने के लिए मात्र इच्छाशक्ति और विवेक चाहिए, कला चेतना चाहिए। भावनाओं के तरल गतिमान स्रोत जो पूरे वेग के साथ टकराने के लिए छटपटा रहे हैं, उन्हें उन चट्टानों की दिशा में मंच का प्रयास मोड़ने का है। हमारी चिन्ता नए सृजन की संभावनाओं को टटोलने और नए उन्मेष के सपनों को पहचानने की है।

इस दृष्टि से मंच की इस कृति को जन-चेतना जागृत करने के लिए कृत-संकल्प और प्रयोगोन्मुखी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सृजन के इस अभियान की पदध्वनियाँ यहाँ इस काव्य संग्रह "यादें" की कविताओं में सुनी जा सकती हैं।

संग्रह के संपादक को साधुवाद।

दिनांक : 16 अप्रैल, 1997
24, बेली रोड, पटना-800 001

जियालाल आर्य, अध्यक्ष
राष्ट्रीय विचार मंच

संपादकीय

साहित्य सिर्फ साहित्य नहीं होता । वह सामाजिक चेतना का दुतरफा रोजनामचा होता है । लम्बे समय तक सुगबुगाती परम्पराएं और प्रवृतियाँ अनेक घटनाओं और रचनाओं के रूप में प्रगट होती हैं जिसे साहित्य में युग परिवर्तन कहा जाता है ।

हिन्दी काव्य साहित्य को जिन तत्वों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है – उसमें जीवन के दार्शनिक पक्षों की अभिव्यक्ति के साथ ही व्यवहारिक जीवन की हलचल भी महत्वपूर्ण रही है । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आज हमारे समक्ष वैचारिक संकट अपने असली रूप में सारे नकाब झाड़कर खड़ा है । वैचारिक संकट का सबसे दरिद्र और दयनीय प्रदर्शन संस्कृति और साहित्य के दावेदारों द्वारा ही किया जाता रहा है । आज मौलिक चिंतन का अभाव खटकता है । मौलिक चिंतन की इस अनुपस्थिति के परिणाम स्वरूप ही कोई बड़े सामाजिक आन्दोलन न हो पाते हैं । मौलिक चिंतन के अभाव का और कारण चाहे जो हो, धर्मप्राण संस्कृति का होना भी उनमें से एक है जो भाग्य, भगवान और अवतारों में मात्र लौ लगाना सिखाती है ।

ऐसी विकट परिस्थिति में राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा कविवर स्व० भोला प्र० सिंह 'तोमर' की पुण्य स्मृति में सहकारिता के आधार पर प्रकाशित काव्य-संग्रह **"यादें"** के सहभागी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में मौलिक चिंतन का परिचय दिया है । प्राय: सभी कवियों ने देश व समाज की वर्तमान स्थिति को बेबाक ढंग से सामने रखकर आत्ममुग्ध लोगों को कुछ सोचने के लिए उकसाने का काम किया है । कविताओं में व्यक्त विचार आज के समाज के कठिन सवालों से तो टकराता है ही, व्यापक मानवीय सच्चाईयों के साथ साक्षातकार भी कराता है । कवि ने गहरे डूबकर समाज की पीड़ा को लिया है । कवि की अपने पेशे के प्रति गहरी ईमानदारी रचनाकारों के दायित्व का एहसास कराती है । यह हिन्दी साहित्य के उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत है । इस संग्रह के कुछ अनुभवी तथा उदीयमान रचनाकारों ने अंधरे से निकलने के लिए अंध कार की जड़ खोजने की अपेक्षा रोशनी के स्रोत को ढूंढ़ना श्रेयष्कर समझा है क्योंकि प्रकाश के अभाव में अंधकार का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता ।

अमंगल कभी नहीं पसीजता, आत्मीयता से भी नहीं । स्मृतियाँ सहेजकर रखी हैं पर जब तक लिपिबद्ध कर किसी संग्रह में उसका समावेश न कर लें तो वह मानस-पटल से खिसक भी सकती हैं । पुरानी यादें बरसों में निथरकर उजली हो जाती हैं, पहले से कहीं ज्यादा नुकीली और साफ । स्मृतियाँ घुलनशील होती हैं पर आज उन पर धूल की परत नहीं सिर्फ उजास के गीले कण सबकुछ बिल्कुल साफ होकर उभर रहा है ।

तोमर जी के साथ बीते सुहाने समय तथा उनके साथ जुड़ी जीवंत स्मृतियाँ भाव-विहवल एवं गला अवरूद्ध कर देने के लिए आज भी काफी है, जबान

लड़खड़ाने के लिए काफी हैं, शब्द बड़बड़ाने के लिए काफी हैं। तोमर जी के साथ बीते वह गहरे अनुभव के क्षण आज भी मेरे मानस-पटल पर एक-एक कर उभर रहे हैं । हम एक दूसरे के कितने करीब थे । मित्रों की तरह एक दूसरे को कितनी आसानी से पढ़ सकते थे । जब-जब मैं और मेरे मित्र उनके साथ रहते थे, हवाएं हमारे मनों में कुछ बुनती रहती थी ।

ऐसा लगता है कि इस संग्रह के रचनाकारों ने श्रद्धांजलि स्वरूप कविवर स्व० तोमर के आदर्शों को मूर्त रूप देने का प्रयास किया है । यह सच है कि जीवन पर्यन्त स्व० भोला प्र० सिंह तोमर ने जो कुछ साहित्य को दिया, उसे शब्दों में व्यक्त करना तो कठिन अवश्य है पर इतना जरूर है कि मानवीय मूल्य, ईमानदारी तथा त्याग की जिस भावना से उन्होंने अपने दायित्व का निर्वाह किया, उसकी चर्चा आज भी करते हम नहीं अघाते । आज से ठीक एक वर्ष पूर्व यानी 27 अप्रैल, 1996 को विधाता के क्रुर हाथों ने आपको हमसे छीन लिया किन्तु अपनी सहृदयता, उदारता, निःस्वार्थ सेवाभाव, सचरित्रता के कारण हम सबों के दिल व दिमाग में आज भी आप उपस्थित हैं ।

मृत्यु न केवल जिन्दगी में एक दर्दनाक घटना है बल्कि हमारे भीतर की बहुत सारी चीजें मृत्य हो जाती हैं । जबतक हम जीवित रहते हैं, मात्र यादें ही बच जाती हैं । आज हम उनकी बातों को यादकर स्फूर्ति से भर जाते हैं। किसी लेखक का मानवीय दायित्व और चिंता यही होती है कि वह मनुष्य को बेहतर जीवन की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे । इसलिए निरन्तर जटिल होते हुए यथार्थ को पकड़ना रचनाकार का महत्वपूर्ण काम होता है । स्व० तोमर जी ने हमें यही सिखाया कि लेखक का यह कर्तव्य होता है कि वह नागरिक को बराबर उस खाई के प्रति, जो उसकी चेतना के बीच में खुदती जाती है, बड़ी होती जाती है, सचेत करवाते रहे । इसलिए लेखक की चेतना में वह सब मौजूद होना चाहिए जो उसके इर्द-गिर्द हो रहा है । आप हमेशा कहा करते थे कि दूसरों की समस्याओं तथा परिस्थितियों को समझने का प्रयास करना चाहिए । तोमर जी की न जाने कितनी स्मृतियाँ एक साथ मेरे मानस-पटल पर उभर कर मन को उद्वेलित कर रही हैं । उनके आदर्श, उनकी व्यवहार-कुशलता, हिन्दी साहित्य के प्रति उनकी निष्ठा और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता हम सबों को अनुप्राणित करती रहेंगी । उनके कार्यकलाप तथा उनकी चिन्तनधारा का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि साहित्य की काव्य विधा पर उनकी एक पकड़ थी, नारी के उत्थान के लिए उनके मन में एक ललक थी और श्रृंगार रस पर कविता लिखकर उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई थी ।

उनकी स्मरण शक्ति का सब कोई कायल था । दिनकर, निराला, पंत तथा प्रसाद की पंक्तियों को वे हमेशा एक स्वर सुना दिया करते थे । उनकी सहजता, उनका खुलापन और उनकी आत्मीयता ही उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी । वे सदैव एक प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में याद किए जाएंगे और यह काव्य-संग्रह

'यादें' उनकी याद को ताजा रखने का काम करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है ।

कविवर तोमर ने जीवन-संघर्ष और रचना-संघर्ष के बीच अपना जीवन जीया । इनके वर्जनामुक्त व्यक्तित्व को सह पाना बहुतों के लिए कठिन था, नैतिकता और मानवीयता के उनके अपने मापदण्ड थे । सुपुत्र का देहावसान उनके जीवन के लिए सबसे बड़ा आघात था । तोमर भीतर से बहुत टूटे पर अपने मानसिक संघर्ष को अद्‌भूत सन्तुलन देते हुए उन्होंने कविताएं रची । यह कहने की जरूरत नहीं कि तोमर की कवि-प्रतिभा का समुचित मूल्यांकन उनके जीवन-काल में नहीं हो सका जिसकी अपेक्षा आज के समीक्षकों से की जाती है । यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी । तोमर की रचनाओं की व्याख्या सुप्रसिद्ध समीक्षक **डा० कुमार विमल** की इन पंक्तियों को उद्धृत कर उनकी स्मृति को नमन करता हूँ –

"तम में जीकर मीत
ज्योति के गीत लिखे हैं मैंने
विष पीकर सुर में गाये हैं
गीत अमृत के मैंने ।"

और **कविवर नेपाली** की ये पंक्तियाँ तोमर की जिन्दगी की सच्चाई को उजागर करती दिखाई देती है –

"अफसोस नहीं इसका हमको, जीवन में हम कुछ कर न सके
झोलियाँ किसी की भर न सके, संताप किसी का हर न सके
अपने प्रति सच्चा रहने का, जीवन भर हमने यत्न किया
देखा-देखी हम जी न सके, देखा-देखी हम मर न सके ।"

मैं हृदय से आभारी हूँ सुप्रसिद्ध उपन्यासकार **डा० भगवतीशरण मिश्र** का जिन्होंने इस काव्य-संग्रह का प्राक्कथन लिखकर इसे गरिमा प्रदान की है ।

अपने समस्त रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करना संपादक अपना पुनीत कर्तव्य समझता है जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस संग्रह को समृद्ध किया । खासकर सरिता त्यागी के प्रति उनकी रचनाओं के लिए मैं आभारी हूँ जिनकी छोटी-छोटी कविताएं मन को छूती हैं और जिसे बार-बार पढ़ने को मन करता है । राष्ट्रीय विचार मंच के संयुक्त सचिव (साहित्य एवं प्रकाशन) श्री मनोज कुमार मेरे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने मंच की ओर से इस संग्रह को प्रकाशित करने में अत्यधिक रूचि ली है ।

दिनांक : 15 अप्रैल, 1997

महासचिव
राष्ट्रीय विचार मंच
बसेरा, पुरन्दरपुर, पटना-1
दूरभाष : 228519

(सिद्धेश्वर)

प्रकाशकीय

जिन्दग़ी वाकई अजूबों और हादसों का मिला-जुला नाम है । वह जिन्दगी ही क्या जिसमें कोई उतार-चढ़ाव नहीं । जी हाँ, 'तोमर' भी एक ऐसा ही चिरपरिचित नाम है जिसके जीवन की दुख ही कथा रही । अचानक वह हमारे बीच से उठकर वहाँ चला गया जहाँ से कोई लौटकर आता नहीं । उनकी याद भर से आँखों में आँसू –

सुख के आँसू दुखी

मित्रों की जाया के,

भर आये आँखों में

'तोमर' की माया से ।

आँखों के आँसू अभी बन्द भी नहीं हो पाये थे कि राष्ट्रीय विचार मंच की कार्यकारिणी ने अपने सक्रिय सदस्य कविवर भोला प्र० सिंह 'तोमर' की यादगार को ताजा रखने के लिए उनकी स्मृति में एक काव्य-संग्रह प्रकाशित करने का सर्वसम्मत निर्णय लिया । उसी निर्णय के अनुपालन में यह काव्य-संग्रह "यादें" आप सभी सुधि पाठकों के समक्ष मंच की ओर से प्रस्तुत है ।

'तोमर' आज हमारे बीच नहीं हैं पर इस रिक्तता की स्थिति में विगत में घटित उनकी सृजनात्मक उपलब्धि के क्षणों की स्मृति तो है जिसे पन्नों में उतारकर पाठकों के सामने परोसना मंच ने न केवल अपने नैतिक दायित्व का निर्वहन किया है वरन् कविवर स्व० तोमर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है । तोमर जी की जिन्दादिली, वाक्पटुता, और भाषा के सचेत-सावधान इस्तेमाल से बहुतेरे चमत्कृत हुए । उनकी साफगोई अपने रंग और ढंग की । इनके भीतर छिपा एक कोमल इंसान । अपनी कृतियों से वे हमेशा हमारे बीच मौजूद रहें, कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर यह संग्रह 'यादें' आपके सामने आया है ।

प्रस्तुत संकलन "यादें" के प्रकाशन की पृष्ठभूमि में एक और प्रयोग हुआ है – वह है रचनाकारों-खासकर उदीयमान प्रतिभाशाली कवियों की आर्थिक स्थिति को मद्देनजर रखते हुए इसे मंच के द्वारा सहकारिता के आधार पर प्रकाशित करना इसके सहभागी कवि स्व० भोला प्र० सिंह 'तोमर' के करीबी एवं आत्मीय मित्रों की मंडली से आते हैं जिनकी चुनी हुई रचनाओं के समावेश के साथ-साथ कविवर तोमर की कुछ पसंदीदा अप्रकाशित कविताओं को अलग से "तोमर स्मृति भाग" में दिया गया है ।

प्रस्तुत संग्रह की कविताएं देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ा चुकी हैं तथा समय के साये में ये वैचारिक धरातल पर सदा जीवित रहने की क्षमता रखती है । इसी विश्वास के साथ मंच की ओर से मैं इसे आप सुधि पाठकों के हाथों सौंप रहा हूँ ।

अवर अभियन्ता संघ, बिहार की मुख पत्रिका 'निर्माता-निदेश' के संपादक कविवर हृषीकेष पाठक, डा. शिवनारायण, गीतकार राजकुमार प्रेमी मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर के प्रति हम अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनकी प्रेरणा तथा मार्गदर्शन के परिणाम स्वरूप यह संग्रह प्रकाशित हो पाया है । हम उन सभी सदस्यों, सहभागी रचनाकारों के प्रति मंच की ओर से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहकारिता के आधार पर इसे प्रकाशित करने में सहयोग प्रदान किया है । मंच के आजीवन सदस्य श्री सुधीर रंजन एवं सदस्य दिलीप कुमार सिन्हा ने इसके प्रकाशन में सहयोग कर अपनी सक्रियता का परिचय दिया है ।

इस काव्य संग्रह के कम्पोंजिग में कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट के सुतेन्द्र कुमार तथा मुद्रक – मे० वैशाली प्रिन्टर्स के सुभाष चन्द्र सिंह धन्यवाद के पात्र हैं जिनका सहयोग सराहनीय रहा है ।

मनोज कुमार
संयुक्त सचिव (साहित्य एवं प्रकाशन)
राष्ट्रीय विचार मंच

दिनांक : 16 अप्रैल, 1997
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

प्राक्कथन

डा० भोला प्रसाद सिंह 'तोमर' की स्मृति में प्रकाशित हो रहा काव्य-संग्रह उनके दिवंगत आत्मा के प्रति रचना-धर्मियों का स्नेहिल एवं शाश्वत नैवेद्य है । वस्तुतः डा० तोमर एक समर्थ समीक्षक होने के साथ ही साथ एक संवेदनशील कवि भी थे । अपनी कविताएँ तो वे सुनाते ही थे, बहुत सारे प्रतिष्ठित कवियों की अनेक पंक्तियाँ उन्हें कंठस्य भी थे । दिनकर के वे दिवाने थे और बात-बात में उनकी पंक्तियाँ उद्धृत कर देते थे। नेपाली से लेकर निराला, महादेवी तथा पंत तक की पंक्तियाँ उनकी जिह्वा पर थी । दुष्यन्त की गजलों का भी उन्हें ज्ञान था । ऐसे कवि और कवि-प्रेमी के लिए शब्द-सुमनों से गुंथे द्वार से अधिक अच्छी वस्तु उनकी स्मृति को नहीं अर्पित हो सकती ।

निश्चय ही डा० तोमर का व्यक्तित्व बहुआयामी था । वे एक अच्छे कवि, समीक्षक और सम्पादक थे आलावा एक निष्जात वाग्मी भी थे। उनको सुनकर सुख मिलता था । कवि के सामने ही, कवि गोष्ठियों में उसकी रचनाओं की धज्जी उड़ाते भी मैंने देखा है । पर उनके स्नेहपूर्ण अभिव्यक्ति और तटस्थ समालोचना के कारण कोई भी उनकी इस आलोचना को अन्यथा नहीं लेता था। लोग उनसे कुछ सीखते ही थे, अतः बुरा मानने की बात ही नहीं थी ।

अतः तोमर एक रचनाकार की अपेक्षा व्यक्ति के रूप में भी प्रशंसनीय थे। अज्ञातशत्रु थे वे । साथ ही एक बड़े अच्छे मित्र । सभी स्थानीय साहित्यकारों के मध्य वे एक सेतु का काम करते थे । किसी के अस्वस्थ होने पर पहला व्यक्ति जो उनके यहाँ पहुँचता था, वह डा० तोमर ही थे ।

एक कवि होना ईश्वरीय देन है । हमारे चिन्तकों ने कहा –

कवित्वं दुर्लभं लोके
विद्या तक सुदुर्लभा ॥
कवित्वं दुर्लभं लोके
शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

अर्थात् इस लोक के मनुष्य-शरीर प्राप्त करना ही दुर्लभ है । मनुष्य शरीर मिल गया तो विद्या प्राप्त करना दुर्लभ है । विद्या आ भी जाय तो कवित्व-शक्ति प्राप्त करना कठिन है .... ।

कवि वस्तुतः श्रद्धा और प्रेम का अधिकारी है । आर्षचिन्तकों ने कहा –

'कविर्मनीषीः पविभूः स्वयंभू : ।'

अर्थात् कवि मनीषी होता है । उसकी मनीषा समान्य लोगों की अपेक्षा अधिक विकसित होती है । वह अपनी कल्पना के बल पर सभी कुछ के संबंध में लिख सकता है । वह स्वयंभू है अर्थात् वह स्वयंभू ही कवित्व पूर्ण होता है । कोई उसे कवि बनाता नहीं अपितृ वह कवि के रूप में पैदा ही होता है । उसके मन मस्तिष्क से कविता की धारा निर्बाध बहती है, जैसे निर्झर से जल बहता है । सब कुछ स्वतः स्फूर्त होता है ।

इसी कारण वर्डसवर्थ ने कविता को परिभाषित करते हुए कहा –

POETRY IS THE SPONTENIOUS OVER FLOW OF POWER FULL FEELINGS

– कविता सशक्त अनुभूतियों का स्वत: स्फूर्त एक दीर्घ बहाव है ।

इसीलिए डा० तोमर एक समीक्षक के रूप में बन्द्य तो है ही उनका कविरूप भी वन्दनीय और स्पृहनीय है ।

इस पुस्तक में जो कवि सम्मिलित किए गए हैं वे भी अपनी कवित्व शक्ति के कारण श्रद्धास्पद हैं ।

बहुतों ने कुछ बड़ी अच्छी पंक्तियाँ लिखी है । डा० सूर्यदेव ने कवि 'श्री भोला प्रसाद सिंह की स्मृति' में, शीर्षक कविता के अन्दर कवि के रूप में वैसा ही कहा जो मैंने कहने का प्रयास किया है –

तुम कवि को सम्मान नहीं दो
तो कवि, कवि क्या रह न सकेगा ?
सुनो न वाणी उसकी तो क्या
कवि सबका दु:ख सह न सकेगा ?

वस्तृत: कवि सबका दु:ख, सबकी पीड़ाएँ पीने के लिए ही होता है । वह नीलकंठ है जो देखते-देखते उस विष को स्वयं अपने कंठ में ले लेता है, जो दूसरे का है । डा० तोमर की यही विशेषता थी । स्वयं तिल-तिलकर मरते रहे, अपनी बीमारी का किसी को पता तक नहीं होने दिया और दूसरों के बीमार पड़ने पर उनके यहाँ दौड़ते रहे, यथासहायता करते रहे ।

कुछ कविताएँ आज के यथार्थ को बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति देती हैं । वस्तुत: वर्तमान से कट कर लिखी कोई भी रचना प्रासंगिकता खो देती है । श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त की 'पराजित नायक' शीर्षक कविता समसामयिक यथार्थ को ही प्रस्तुत करते हैं उनका एक सफल प्रयास है –

लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही
और ताल ठोंकर कहते हो
कि तुम सामाजिक न्याय कर रहे हो ?
तुम्हारा आद्यप उन लोगों को
सहारा देने के लिए है
जिनके हाथ सने हैं
निर्दोष जनों के खून से ?

अब लोकतंत्र के नाम पर सचमुच ही राजतंत्र हावी है । आज जन की सेवा के नाम पर आम आदमी के रूप में चुनकर आया तानाशाह आम आदमी की पीड़ा और उसके **निर्वाणार्थ** दिए आश्वासन को किसी दु:स्वप्न की तरह भूल जाता है । सामाजिक न्याय के नाम पर वह समाज का शोणित पी पर अपने को सबल शक्तिशाली और रातोंरात **धनपति** बना लेता है । वह आदमी को कभी खास आदमी बनने ही नहीं देता, क्योंकि उसे आदमी की पीड़ा की आग पर ही अपनी राजनीति की रोटी सेंकना है ।

संग्रह की प्रायः सभी रचनाएँ स्तरीय एवं युग बोध से जुड़ी हैं । सबका उल्लेख करना संभव नहीं । डा० शिवनारायण की कविताएँ पर्याप्त, प्रखर और धार-दार होने के साथ ही हमारी सोच को प्रभावित करती हैं । मैं डा० श्रीमती सिंह की इन पंक्तियों को उद्धृत कर अपना प्राक्कथन समाप्त करना चाहता हूँ –

शीशे का दिल
बड़ी जोर टूटा
तुमने सुना नहीं ।
पलकों से अश्रु
टपकने को थे
तुमने देखा नहीं ।
पीड़ा सहने की
क्षमता थी अजब
तुमने समझा नहीं ।
दर्द को पीकर
मुस्कुराते होठों से
तुमने सीखा नहीं ।

हाँ, यहाँ दिल तोड़ने वालों की कमी नहीं । दिल तोड़ने वाले बेदर्दी होते हैं और एक बेदर्द एवं संवेदनहीन व्यवस्था भी असंख्य दिलों को तोड़ने और अशेष सपनों को साकार नहीं होने देने के लिए वह सब कुछ करती है जो उसके वश में है । रोटियाँ की जगह बारूदी गोलियाँ को देना वह अपनी सक्रियता की परिचायिका मानती है । पर अहंकारी व्यवस्था को मार्ग पर लाने के लिए एक कवि, एक कलमधारी ही समर्थ है । अहंकार को कविगुरू रविन्द्र नाथ ने यों ही नहीं विगलित करना चाहा था –

आमार माथा नत करो दान हे,
तोमर चरण धूल तले
सकल अहंकार ते आमार
डुबाओ पोखर जले ।

सत्ताधारी जब तक अपने मिथ्या अहंकार को विसर्जित कर आम आदमी के दर्द का भागीदार नहीं बनेगा तब तक डा० तोमर के सदृश कितनी प्रतिमाएँ दवा-दारू और रोटी के अभाव में दम तोड़ती रहेंगी ।

इत्यलम ।

दिनांक 14.4.97
61, आनन्दपुरी
पटना-1

डा० भगवतीशरण मिश्र

काव्यानुक्रम

			पृष्ठ
अपनी बात आप से			
संपादकीय			
प्रकाशकीय			
प्राक्कथन			
1. जियालाल आर्य	:	चार कविताएँ	14–17
2. नृपेन्द्र नाथ गुप्ता	:	पराजित नायक अस्ताचल का सूर्य	18–20
3. डॉ० शशि सिंह	:	माँ की ममता प्रेम ही भगवान तुमने सीखा नहीं, बोनसाई	21–24
4. हृषीकेश पाठक	:	बेनकाब हुए हैं अपने चेहरे ब्राह्मंड का संतुलन बिगड़ेगा कैसे कहूँ वह अपना ही घर है मैं बड़ा आदमी हूँ	25–28
5. रामसंजीवन शर्मा	:	रोना क्यों, झाँकियाँ	29–32
6. विपिन पल्लवी	:	सियासती पतंगवाजी कैसा रद्दोबदल	33–35
7. डॉ० शिवनारायण	:	मौसम के बदलने से महानगर, फरवरी की शाम	36–39
8. डॉ० सूर्यदेव सिंह	:	एक गीत कवि स्व. भोला प्रसाद सिंह तोमर की स्मृति में, आकांक्षा, अभिलाषा गीत, शायरी	40–43
9. सरिता त्यागी	:	लहूलुहान दहलीज अग्नि परीक्षा, यादें पीठ में चाकु, मृगतृष्णा शब्द की गरिमा, नारी	44–47
10. सिद्धेश्वर	:	शिकायत फितरत की नई दिशा की तलाश आज के लोग	48–52

11. राजकुमार प्रेमी :	भोला प्रसाद सिंह तोमर के जीवनकाल में उनके जन्म दिवस पर तोमर अपना देश गया भाभी की चिट्ठी	52-56
12. चन्द्र प्रकाश :	आत्मघात, तीसरी आजादी ईर्ष्याग्नि, प्रगति गीत	57-59
13. महेन्द्र प्र. सिन्हा :	मानव	60-61
14. हरीन्द्र कुमार विद्यार्थी :	गज़ल, गीत नवनीत, गिरगिट, गेहूँअन	62-65
15. मनोज कुमार :	प्रश्न, रोटी अंतर, शहर जुलूस कुछ शब्द चित्र तुम्हारी यादें	66-70
16. प्रभात कुमार धवन :	कर्मवीर तुम्हारी कविता जीव हिंसा, विधवा-सी तू	71-74
17. राकेश प्रियदर्शी :	गजल, अपवाद, कविता अमर रहेगी	75-77
18. अरुण कुमार गौतम :	फूल का दर्द दूषित माहौल मानवता का पुष्प	78-80
19. प्रभुनारायण दत्त ब्रह्मचारी :	पटेल-गीत, किसान युग-युग से हम खोज रहे	81-82
20. गोपाल शरण सिंह :	मेहनत का फल भगवान बुद्ध	83-84
स्व. भोला प्रसाद सिंह तोमर :	बोलो, मेरे देशवासियों ? मैं सचमुच बीमार हो गई आओ पूजा करें, देश की उज्जवल माटी है संध्या वसंत की झंडा झुकने के पहले ही वीरो, बलिदान चढ़ा देना बेटी एक गरीब की, लेकिन बात न माँनूगी	

परिचय

नाम	:	**जियालाल आर्य**
जन्म तिथि	:	16 अगस्त, 1941
जन्म स्थान	:	ग्राम-पूरे उधो, अमेठी सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश
पिता का नाम	:	स्व० श्री भोला प्रसाद
शिक्षा	:	एम०ए० (भूगोल), इलाहाबाद विश्वविद्यालय
सेवा	:	1665 में उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय आरक्षी सेवा में योगदान । 1668 में भारतीस राजस्व सेवा में योगदान । 1969 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (बिहार केडर) में योगदान ।
सम्प्रति	:	आयुक्त एवं सचिव, पथ निर्माण, परिवहन, सूचना एवं जनसम्पर्क तथा संसदीय कार्य विभाग ।
पुरस्कार सम्मान	:	1973-हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवा के अभिज्ञान हेतु विक्रमशिला, हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा "विद्यासागर" की डिग्री । 1986-87-"विशिष्ट हिन्दी सेवा योजना" के अन्तर्गत "न्याय एवं प्रशासन" के लिए राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा 'ताम्रपत्र', स्वर्णपदक एवं 5,000/- रू० का पुरस्कार । 1989-"बिरसा भगवान पुरस्कार योजना" 1988-89 के अन्तर्गत बिहार सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा "जय बिरसा" काव्य पुरस्कृत । 1990-"महाप्राण कर्पूरी ठाकुर" पुस्तक के लिए बिहार सरकार से "प्रशंसा पत्र" प्राप्त । 1991-साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा "कविश्री" की उपाधि । 1991-हिन्दी साहित्य परिषद् बोकारो द्वारा "कवि रत्न" "प्रशस्ति पत्र" प्रदान किया गया ।
सम्मान	:	शांति कुंज हरिद्वार से "यज्ञवीर" की उपाधि

रचनाएँ : बिहार की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर गद्य-पद्य रचनाएँ प्रकाशित ।

आत्मकथ्य : विरासत में मिली सामाजिक मानसिकता से प्रेरित होकर समाज तथा देश के लिए कुछ कर सकने की तमन्ना ।

1992-"रमन साधना पुरस्कार" योजना के अंतर्गत साहित्य सेवा के लिए "स्वर्ण पदक" ।

1992-साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा "सत्य का सफरनामा" हिन्दी कथा संग्रह के "कथाशिल्पी शिवसागर मिश्र शीर्ष साहित्य पुरस्कार" से पुरस्कृत ।

1993-हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए साहित्य परिषद, तेघड़ा, बेगूसराय द्वारा "राष्ट्रकवि दिनकर काव्य शीर्ष सम्मान" से पुरस्कृत ।

1995-साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा "स्वतंत्रता संग्राम-बुद्धिजीवियों की भूमिका" के लिए पुरस्कृत ।

प्रकाशित रचनाएँ :

कथा संग्रह	शीर्ष पुरस्कार
अलग-अलग रास्ते	1972
विश्वास के अंकुर	1988
सत्य का सफरनामा	1962-शिव सागर मिश्र शीर्ष साहित्य पुरस्कार
इज्जत की जिन्दगी	1995
गीत संग्रह :	
राही	1985
निज प्रिय घर में	1994
काव्य :	
अमर ज्योति	1984
जय बिरसा	1988-राज्य पुरस्कार
बाल साहित्य :	
आजादी के दीवाने	1990
आदिवासी लोक कथायें	1992
जीवनी :	
महाप्राण कर्पूरी ठाकुर	1990 राज्य प्रशस्ति पत्र
कर्पूरी ए-पोर्ट्रेट	1991

डा० अम्बेदकर
एक कृति क्रांतिदर्शी 1992
स्वतंत्रता संग्राम :
स्वाधीनता समर के देशगीत 1994
स्वतंत्रता संग्राम
बुद्धिजीवियों की भूमिका 1994
विचार विमांशा
1-दलित कहां जाय 1997
प्रकाशनाधीन
1-देश-विदेश
2-रजपाल-साहित्य ऋषि
3-मृतः को वा न जायते-उपन्यास

संपर्क : 24, बेलीरोड, पटना-800 001, दूरभाष : 282030

•••

चार कविंताएं

(1)

तुम्हारे निवास पर मैं प्रायः जाता हूं,
पर हर बार तुम्हें परिवर्तित पाता हूं ।
तुम्हारा निबास तो पूरा ब्रह्माण्ड है,
महिमा तुम्हारी जग जानता, प्रकाण्ड है,
क्षिति जल पावक गगन समीर से परे,
पर सब में निवसित, जो उसको धरे ।
तब तुम मुझे मंदिर, मस्जिद, गिरिजा में,
प्रेरित करते हो अपने ही क्यों घर में ।
अपने प्रकाश का एक अंश मुझे दो,
अंधकार दूर करने की शक्ति मुझे दें ।
पंच तत्व के द्वार पर दस्तक किया,

(2)

खोला दरवाजा, तो मृत्यु का दर्शन किया ।
पूछा, चलना है साथ मेरे क्या-क्या ले चलोगे,

सबकुछ तुम्हारा ले चलो, उत्तर दिया ।
ढांचे में सयनये आया था रोते हुए यहां,
पर जान बृद्ध छोड़कर चलता हूं कह दिया ।
जो कुछ किया है मैंने अच्छा हो या बुरा,
सब छोड़कर यहीं पर चल साथ हो लिया ।
आने पर जो हंसे थे, वे रो रहे हैं, आज,
जो कुछ कराया तुने मैंने वही किया ।

(3)

हे अंशु भोर में ही तुम मुसकराते आये थे,
अहलादित लाल होठों से प्रकाश फैलाये थे ।
अंधकार को दूर कर जीवन संचार किये,
अलसाये नेत्रों को जागृति का संसार दिये ।
बिना किसी अंतर के सब को अपनाया,
अपना प्रकाश सारे विश्व में फैलाया ।
तुम्हारे ही प्रकाश से प्रकाशवान मानव में,
अपना उसका भेद क्यों ऋषि, मनु, दानव में ।
अमृत में मिलावट नहीं, रहे वह किसी घट में,
तेज तेरा कलूसित क्यों विश्व के धर-धर में ।
मेरे विश्वास को अविश्वास से दूर कर,

(4)

हर जीव में, विशेषकर मानव में, नूतन प्रकाश भर ।
हे परमेश्वर मेरी याचना स्वीकार करो
मेरी रिक्त झोली में कुछ दुख अनुदान करो ।
याद रखूं जिससे तुम्हारे दिये सुख को,
समाज को, मानव धर्म को, जग को निज कर्म को ।
शोक का अंश भी कुछ मुझे साथ में देना
जीवन-मरण सत्य है अहसास साथ में देना ।
गर्व उतना हो जितना दाल में नमक होता
तुम न होते तो यह सत्य भी नहीं होता ।

•••

परिचय

नाम	: **नृपेन्द्र नाथ गुप्त**
पिता का नाम	: स्व० उदित नारायण लाल
जन्म	: 1 सितम्बर, 1934
स्थायी पता	: माधोपुर, मुंगेर
शिक्षा	: एम० ए० (हिन्दी), पटना विश्वविद्यालय
प्रकाशन	: आत्मबोध (काव्य संग्रह), विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ।
सम्मान	: भारतीय भाषा भूषण से सम्मानित
आत्मकथ्य	: साहित्य को आज कठघरे में बांधकर सीमित किया जा रहा है। चाटूकारिता का आज साहित्य में समागम से साहित्य का स्वरूप विकृत हो गया है। काव्य के माध्यम से साहित्य के सही स्वरूप को प्रस्तुत करना हमारा अभिष्ट है।
सेवा	: सेवानिवृत जिला निबंधन पदाधिकारी
सम्प्रति	: स्वतंत्र लेखन
सम्पर्क	: 'बरनवाल श्री उदितायतन', शेखपुरा, पटना-14, फोन : 287587

पराजित नायक

पराजित हो गए तुम उसी दिन
जिस दिन तुमने हाथ मिलाया
उस व्यवस्था से
जिसे तुम कभी नकार चुके थे।
क्रान्ति की कोख से जन्मी तुम्हारी शासन-व्यवस्था
आज उतनी ही भ्रष्ट है
जिसकी तुम कभी निन्दा किया करते थे
तुमने अपने हाथ रंगे हैं
उन निर्दाष जनों के खून से
जिसकी रक्षा का
कभी तुम दंभ भरा करते थे।
यह तुमने कौन सी व्यवस्था का वरण किया
जिसमें तुम इंसानियत को भूल गए।
अर्थ पिपासा ने
तुम्हारी अन्तश्चेतना को सर्वथा कुंठित कर दिया।
अब तुम्हारे हृदय में स्पन्दन नहीं होता
मानवता की साँसों का,

प्रेम और सौहार्द्र का,
गैर बराबरी और डूबते जनों को उबारने का ।
तुमने ही धिक्कारा था कभी उनको
जिन्होंने चुरा लिया था हक जन-जन का ।
आज तुम भी वही कर रहे हो
जो वे करते थे कल तक
लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही
और ताल ठोंक कर कहते हो
कि तुम सामाजिक न्याय कर रहे हो ?
तुम्हारा आह्वान उन लोगों को सहारा देने के लिए है
जिनके हाथ सने हैं निर्दोष जनों के खून से ।
जिन्होंने बार-बार लोकतंत्र की हत्या की है,
जिन्हें न्याय और अन्याय में कोई फर्क मालूम नहीं होता ।
क्या इसी व्यवस्था परिवर्तन की आकाँक्षा
रखते थे तुम कल तक ?
यदि नहीं तो तुम्हें भी इतिहास अपने
आवर्त में समेट कर
जमीन में दफना देगा ।
और तब कोई नहीं बचेगा
तुम्हारे नाम पर मर्सिया पढ़ने वाला ।

अस्ताचल का सूर्य

शाम होने को आई,
दीप जलाने का समय हो गया,
अंधकार का साया,
और अधिक गहराने लगा ।
इसे कुछ हद तक समाप्त करना होगा ।
जीवन संध्या की इस घड़ी में
मुक्ता होना चाहता हूँ,
अपने सम्पूर्ण जीवन की धरोहर
अमानत स्वरूप
स्वयं में सिमटी हुई
नई पीढ़ी को सौंपना चाहता हूँ ।
ताकि वे अपने जीवन-आयाम में
एक नए अध्याय की शुरूआत कर सकें

बगैर किसी व्यवधान के ।
यह अमानत और कुछ नहीं
दूसरों के लिए जीने की अमिट आकांक्षा है ।
अपने लिए तो सभी जीते हैं ।
दूसरों के लिए जीकर भी देखें
कितनी आत्म संतुष्टि मिलती है ।
मैंने अपने जीवन को नाहक उलझाए रखा
संकीर्ण दायरे में ।
चाहकर भी समय नहीं दे सका
औरों के लिए।
सम्पूर्ण जीवन के अस्ताचल में
सब कुछ साफ नजर आने लगा है
जिन्हें मैंने अपना समझकर
सब कुछ अपर्ण कर दिया
वे ही अब अलग थलग हो गए हैं
और शेष रह गया है
परायापन, उपेक्षा और विस्मरण ।
समय के सूर्य को
अवसान-काल में
उन्हें देने को कुछ नहीं रहता
तो वे विस्मृति के गर्भ में
डूब जाने देते हैं ।
नियति के इन निष्ठुर हाथों को
बदलना होगा ।
नींव की ईंट पर ही
गगनचुम्बी इमारतें खड़ी रहती हैं ।
नींव के पत्थरों की भी
अपनी एक अलग अहमियत होती है
वे अपने को मिटा कर भी
कंगूरे को ऊँचाई का आयाम देते हैं ।
समय के सच के सहारे
हम अस्ताचल के सूर्य को भी
सहानुभूति का अर्घ्य देकर
उसकी स्मृति को दीपदान दे सकते हैं ।

●●●

परिचय

नाम : **श्रीमती (डा०) शशि सिंह**
पति का नाम : डा० विनोद सिंह
जन्म : 8 फरवरी, 1954
शिक्षा : एम०ए० (हिन्दी), कलकत्ता विश्वविद्यालय, पीएच०-डी०
प्रकाशन : राका रश्मि (काव्य संग्रह), विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ।
सम्प्रति : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे० डी० विमेन्स कॉलेज, बेली रोड, पटना
आत्मकथ्य : मेरी कविताओं की पुष्प वाटिका में अनेक प्रकार के फूल खिलें हैं–मेरी भावनाओं के, मेरे विचारों के, मेरी कल्पनाओं के, मेरे साथ घटित अनुभवों के । रचनाएँ मेरी सृष्टि हैं और मैं अपनी सृष्टि से अलग खड़ी द्रष्टा मात्र हूँ ।
सम्पर्क : डा० विनोद सिंह, लोयला स्कूल के सामने, कुर्जी बगीचा, पत्रा०-सदाकत आश्रम, पटना-10, दूरभाष - 260946

माँ की ममता

बिखरता प्यार
बदलती ममता,
समय से प्रभावित
माँ की ममता ।
पुत्र की जगह
अगर हो पुत्री
गर्भ में
तब
गर्भ हत्या
भ्रूण हत्या
हत्या नहीं ?
यह अभिशाप नहीं
कोई पाप नहीं
क्योंकि यह है;
आज की माँ की ममता का रूप
ममता सिर्फ पुत्र के लिये
ममता बेटी के लिये नहीं ।

•••

प्रेम ही भगवान

भले ही,
तुम तोड़ दो मन्दिरों को
गिरा दो मस्जिदों को ।

पर ख्याल रखना
न तोड़ना
न गिराना
मेरे दिल को ।

क्योंकि,
इसमें बसते हैं
भगवान ।
क्योंकि
इसमें रहते है
खुद खुदा ।

जिनको,
हम प्रेम कहते हैं
और,
प्रेम ही भगवान ।

तुमने सीखा नहीं

शीशे का दिल
बड़ी जोर से टूटा
तुमने सुना नहीं ।

पलको से अश्रु
टपकने को थे
तुमने देखा नहीं

पीड़ा सहने की
क्षमता थी अजब
तुमने समझा नहीं ।

दर्द को पीकर
मुस्कुराते होठो से
तुमने सीखा नहीं ।

•••

बोन साई

मैं बोन साई,
विरट कानन में विराट
पला,
बढ़ा,
बढ़कर विशाल हुआ ।

विशाल शाखाएँ
विशाल टहनियाँ
दूर दूर तक छाया फैलाती रही
आते जाते बयार का मन बहलाती रही
क्लान्त पथिक को
अपनी शीतल छाया में
सुलाया,
सहलाया,
लोरी सुनाया
मेरे पत्तों ने ।

मैं था आजाद,
आजादी थी फैली दूर-दूर
सखन की समां जब बंध जाती
नील व्योम जब गहराता
बादल जब घुमड़ कर आता
रह रहकर गर्जन करता
तब,
गर्व से सीना तान
हिलता डुलता
और मानव हृदयों को
देता, तुष्टि 'औ', आनन्द ।
कितना सुखद था
कितना परोपकारमय था
मेरा विराट
अस्तित्व ।

•••

मै जीव,
निरीन्द्रिय,
ज्ञान, शून्य
अनुभव हीन
दृष्टि विहीन
दुःख, सुख से मुक्त
जैसे तपस्वी,
हो साधना में लीन
जिसकी तपस्या
सिर्फ परोपकार के लिये
अपने लिये कुछ भी नहीं
सिर्फ देना
देना ही उसका काम
लेना नहीं जानता वह ।
पर,
स-इन्द्रिय मानव
जिनके पास,
आंख,
कान,
नाक,
सजग अनुभव से परिपूर्ण
आज नहीं पहचान सका
मेरे अस्तित्व को
मेरी परोपकारिता को ।

छीन ली उसने
मेरी आजादी,
कैद कर लिया,
गमले में,
मै सिमट गया
छोटे से,
रूप में,
छोटे से आकार में ।

मैं !
हाँ मै
बन गया
बदनसीब
बोन साई ।

•••

परिचय

नाम : **इं० हृषीकेश पाठक**

पिता का नाम : श्री राम नारायण पाठक

जन्म : 3 जनवरी, 1956

जन्म स्थान : ग्राम+पत्रालय-नियाजीपुर, जिला-बक्सर

शिक्षा : सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा

पेशा : बिहार सरकार के जल संसाधन विभाग में कनीय अभियंता

रूचि : कविता, कहानी, लघुकथा तथा नाटक लेखन एवं मंचन और समाज की सेवा किसी भी रूप में करते रहने की अभिलाषा

सम्पादन कार्य : अवर अभिंयता संघ, बिहार की मासिक पत्रिक "निर्माता-निदेश" का सम्पादक
कैलाश भवन, पुनाईचक, पटना से प्रकाशित होने वाली धार्मिक मासिक पत्रिका 'धर्मनिष्ठा' का कार्यकारी सम्पादक

सम्पर्क : अवर अभियंता संघ, बिहार
अमरनाथ पथ, पटना-800 001, दूरभाष-224205

बेनकाब हुए हैं अपने चेहरे

पत्थर फेंकते हैं, छुपाये नकाब में अपने चेहरे;
आग लगी गुलिस्तां में, बेनकाब हुए हैं अपने चेहरे ।
शीश महल में रहने वाले, अपना घर ही भूल जाते हैं;
शीश महल का एक-एक शीशा, पत्थर से वे तोड़ जाते हैं;
रहने को जब ठौर न मिलता, मुरझाते हैं अपने चेहरे ।
चंद चांदी के टुकड़ों पर, माँ के दामन को टुकड़े करते;
सोहरत के ख्याली ख्वाबों में, भाई-भाई दुश्मन बनते;
भटक रहे वे गहन-अँधेरा, नोच रहे हैं अपने चहेरे ।
फिक्र नहीं कि देश कहाँ है, फिक्र पड़ी है मजहब की;
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में, आग लगी है हसरत की;
हसरत ही रह जाये दिल में, होंगे एक कब अपने चेहरे ।

•••

ब्रह्माण्ड का संतुलन बिगड़ेगा

क्यों कोसते हो आसमान को
कि बादल पानी नहीं बरसाते ?
मरते हुए इन्सानियत को देखकर
तेरी आँखें पानी बरसायी हैं ?
आकाश की विशालता
अपनी बांहों में
समेट लेना चाहते हो;
मगर उस धरा की भी चिन्ता करो,
जिस पर खड़े हो
वह खोखली होती जा रही है ।
अम्बर में उड़ने का
तुम्हारा शौक हो सकता है;
परन्तु अवनि के आँचल में
बारूदों के गठ्ठर बांधकर नहीं ।
उड़ते चील और गिद्ध के चोचों में
मानव लोथड़ों के अटके रेशों को देखकर
तुम्हारा मन ललच गया है;
इसीलिए अंतरिक्ष की कोख में
अपने ठहराव की तुम्हें फ्रिक्र है,
और तुम्हारी साजिश है
उपर से ही जिस्मों में सूँढ़ लगाकर
मानव के जिन्दा कंकाल में
बचे-खुचे लहू को पी जाने की ।
मानव हरावरी पर
अपने उँचे महलों की नींव रखकर
खुबसूरत गुम्बज पर
मखमली पंखों वाली तितलियों को
लुभाना चाहते हो ।
मैं जानता हूँ
तुम कभी नहीं बुलाओगे,
पहाड़ों के बीच दरकते चेहरों को,
सुअर की गलीज में गलते चेहरों को,
जिनके लहू का कतरा-कतरा

लग गया है तुम्हारे महलों की खुबसूरती में ।
लेकिन याद रखो
ब्रह्माण्ड का संतुलन बिगड़ेगा,
तुम्हारी उँची होतीं अट्टालिकाएं
जा रहीं हैं सूर्य के समीप,
तुम जल जाओगे
जल जायेंगे तुम्हारे महल,
फिर नहीं आयेंगी
खुबसूरत तितलियाँ
तुम्हारे महलों में थिरकने के लिए
लेकिन
पहाड़ों के बीच दरकते चेहरे,
गलिजों में गलते चेहरे,
फिर भी रह जायेंगे
तुम्हें मलबों से बाहर निकालने के लिए ।
और ठहाका लगायेगी
इंसानियत, इंसान के कुकर्म पर
हड़ियां और महुओं के रस के साथ ।

•••

कैसे कहूँ वह अपना ही घर है

न मुझको पता है, न तुझको खबर है;
कहाँ किस मोड़ पर, खड़ा रहबर है ?
दामन जमाने से तुझको बचाना
आसान इतना नहीं सोच लेना
पहरा है गलियों में अस्मत लुटेरों का
मुश्किल है कहना कौन रह-गुजर है ?
चमन जो लगाये थे फूलों के अपने
उन्हें क्यारियों में कौन बांट डाला ?
किसे हम कहें आग किसने लगायी
जब अपनों के हाथों में ही अग्नि-सर है ।
वो भाई की स्वांगें, पड़ोसी की ख्वाबें,
टूटे जा रहे हैं सदियों के रिश्ते
अखण्डता, निरपेक्षता की कौन करे बात

जहाँ मजहबी शत्रुता ही मयस्सर है ।
जहाँ खून पीते हों, मानव का मानव,
जहाँ बारूदों की दीवारें खड़ी हों,
जहाँ संगीनों पर सरकारी जम्हूरियत,
कैसे कहूँ वह अपना ही घर है ।

•••

मैं बड़ा आदमी हूँ

अहिंसा की बात कर,
हिंसा करता हूँ ।
सत्य बोलने की सीख दे
असत्य बोलता हूँ ।
बात करता हूँ अखण्डता की
साजिश रचता हूँ विखण्डता की ।
धर्म निरपेक्षता की बात कर
साम्प्रदायिकता फैलाता हूँ ।
गरीबी हटाने के नाम पर
झोपड़ियों को उजड़वाता हूँ ।
देश की गुप्त सूचनाएँ
विदेशों को बेचता हूँ,
पैसा जमा करता हूँ विदेश में
अर्जन करता हूँ अपने ही देश में,
पंजाब, कश्मीर की समस्या मेरी ही देन है
झारखण्ड, गोरखालैण्ड की समस्या मेरी ही देन है ।
क्या इतना काफी नहीं है
बड़ा आदमी बनने के लिए ?
मुझमें सर्वगुणों का वास है,
क्योंकि तन पर खद्दर का लिबास है ।
सारे गुण विद्यमान है,
एक बड़ा आदमी होने के लिए
इसलिए फक्र के साथ कहता हूँ
मैं बड़ा आदमी हूँ ।

•••

परिचय

नाम : **राम संजीवन शर्मा**
पिता का नाम : स्व० शीतल प्र. शर्मा
जन्म तिथि : 25 दिसम्बर, 1921
जन्म स्थान : ग्राम-पत्रा-नोनहर, थाना-सूर्यपुरा (रोहताष)
शिक्षा : स्नातक
प्रकाशन : 'पनवसिया' उपन्यास 1958 में प्रकाशित, वर्धा से प्रकाशित सर्वोदय पत्रिका तथा 'शिखा संकेत' में नियमित रूप से लेखन, गाँधी दर्शन और सर्वोदय दर्शन में अनवरत लेखन।
सम्मान : अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन द्वारा सम्मानित।
सेवा : प्राचार्य, पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान, गया से सेवानिवृत।
संपर्क : ए/12, वित्त विभाग कॉलोनी, फेज-2, खाजपुरा, मौर्यपथ, पटना-14, फोन : 287136

•••

"रोना क्यों"

रोना है पुत्र को बनता कुपुत्र देख,
रोना है भाई जब बनता विभीषण है,
रोना है पाखंड देख पंडित की पूजा में,
रोना है लोभ देख साधु के चोंगा में।
रोना है डकैती देख देवों के मंदिर में,
रोना है नाग देख दोस्ती के दामन में।
रोना है अमीरी और गरीबी बीच खाई देख,
रोना है देखकर गिरावट पढ़ाई में।
रोना है हाजी का इज्जत देख दौलत लिए,
बिकता इंसाफ यहाँ काजी दरबार में।
रोना है जननिधि का होता घोटाला देख,
अबर न तो एक पर रूरल अनेक हैं।
रोना है कवियों की लेखनी की पैठ देख,
आँसू के गीत छोड़ राजगीत गाते हैं।
रोना है रिश्वत का चलन देख सभी जगह,

बाबू को सौ टक्का मंत्री को लाख है ।
रोना है बेटी की बढ़ती जवानी देख,
पाँव में छाले पड़े मिलता न दूल्हा है,
घर पर फूस नहीं लड़का तबाह है,
तिलक का पूछो मत केवल दस लाख है,
पढ़ने से मतलब नहीं, नाम केबल कॉलेज में,
आजकल दुनिया का कैसा यह चाल है ।
रोना है माई जब दाई बनी बेटा घर,
पलंग पतोहू बैठ चोटी गूथवाती है,
रोना है दोना में दाना देख बेटी का,
बेटा जब साली संग मुर्गी चबाता है ।
रोना है बोतल का प्रभाव देख आँगन में
बाप-बेटा साथ पीते कैसा कमाल है ।
रोना है पालटिक्स में गुंडों की पैठ देख
भले की पूछ नहीं गुंडों गलेमाल है ।
रोना है चुनावों में वोटरों का हाल देख
जाने के कबल ही वोट पड़जाता है ।
रोना है ब्लाकों में लूट की छूट देख,
बिना मिट्टी डाले ही योजना बन जाती है ।
रोना है जात का जमता प्रभाव देख
गैर भात भाड़ पड़े कितनो बड़ा ज्ञानी है ।
कहते हैं बात सभी उँची मनुजता है,
लेकिन कलंक कहाँ कोई धो पाता है ।
रोना है बढ़ता हुआ राशन का दाम देख
आदमी का दाम अब रातोदिन घटता है ।
देश में सोना है पर मिलता न दाना है
मंत्री-निवास बना कारू खजाना है ।
कहे संजीवन हंसना अब सपना है
जीवन-कहानी बस रोना ही रोना है ।

•••

"झांकिया"

(1) मालिक गर ताकत दे तो भाव हनुमान का दे,
जिंदगी गर सलामत रहे तो शक्ति प्रह्लाद का दे ।

(2) रहनुमाई गर पास है तो रहमान से क्या मतलब !
दिल अगर हमदर्द है तो भगवान से क्या मतलब !!

(3) जिस दिन से मैंने खुदी को मिटाकर,
मालिक के चरण का सेवक बन गया हूँ
उस दिन से जख्म तो मुझे होता है,
पर दर्द मालिक को होता है ।

(4) मैं वैसा साधक या फकीर नहीं बनना चाहता हूं,
जो खूदा की खुदाई आसान में देखा करते हैं ।
मैं तो सरजमीं का एक अदना शायर हूं,
और शैतान में भी भगवान को देखा करता हूं ।

(5) काँटों के बीच जीना कोई मुश्किल काम नहीं,
बशर्ते की तुम्हारा मिजाज फूल-सा हो ।
इस दुनिया को मतलब, काँटों की गोद में पले फूल से है,
उसके शूल से नहीं ।

(6) क्या शान घट जाती कि रूतवा घट गया होता,
जो गुस्से में कहा तूने, वही हँस के कहा होता ।

(7) पूजा है बेसहारों को सहारा देना,
जो गमोदिल हैं उनके गम को कम करना,
खुदा का नमाज, पूजा है यही,
जो बर्बाद है उनका घर आबाद करना ।

(8) आगरे का ताजमहल, कोई साधारण महल नहीं हैं
यह तो एक आदर्श पति-पत्नी के प्रेम की निशानी है
यह दुनिया कितनी बेहतरीन होती
अगर यहाँ कुछ शाहजहाँ होते
कुछ मुमताज महल होती

(9) काबिले तारीफ वह शौहर है,
जो अपनी बीबी के डाँट-फटकार और दुत्कार को दुलार मान लेता है,
और काबिले तारीफ वह बीबी है,
जो अपने शौहर को डाँटना-फटकारना, और दुत्कारना अपना मौलिक अधिकार मान लेती है ।

(10) डरना और डराना जीवन के एक नकली सिक्के के दो पहलू हैं ।
जीवन का असली सिक्का वह है,
जो न किसी से डरता है और न किसी को डराता है ।

(11) बेटा बाप का चरण तबतक चूमता रहता है
जबतक बाप के खोत में काफी पैसा जमा रहता है
बहु अपनी सास को एक कप चाय तबतक देती रहती है
जबतक सास के गले में सोने का एक वजनी हार टंगा रहता है ।

(12) दिल लगा चट्टान से तो फूलों से क्या मतलब,
चट्टान से ठोकर लगी तो रोने से क्या मतलब ।

(13) मैं भी कुछ गलती करता हूँ,
आदमी हूं आदमी पर विश्वास करता हूं,
प्यार के बदले में प्यार चाहता हूं,
इस देश के राजनेताओं को भारत का लाल कहता हूं,
हरेक सफेदपोश को शरीफ मानता हूं,
सभी जटाधारियों को संत कहता हूं
मैं भी कुछ गलती करता हूं,
आदमी हूं आदमी से प्यार चाहता हूं ।

(14) मारा-मारा फिरता हूँ जीवन का पात्र लिए
मिलता न पानी जीवन बेपानी है
पानी का प्यासा हूं जीवन में धार नहीं
आसमां बेपानी और धरती बेपानी है
मोती है लाख पर उनमें न पानी है
बंदे करोड़ पर लूटी जवानी है ।

(15) मेरे दोस्त ने दोस्ती तोड़ ली इसका मुझे कोई गम नहीं,
गम सिर्फ इस बात का है कि
उसने दोस्ती तब तोड़ी जब मेरे पास पैसा बहुत कम था ।
मेरी किस्ती भी डूब गई, इसका भी मुझे कोई गम नहीं,
गम सिर्फ इस बात का है कि
मेरी किस्ती वहाँ डूबी जहाँ पानी बहुत कम था ।

(16) आँखों का पानी जम कर बर्फ हो गया
चूंकि हमारे पास दर्दे दिल का ताप नहीं है ।
हम दोपाया होकर भी चौपाया बन गए
चूंकि गिरे हुए को उठाने के लिए हमारे पास दो हाथ नहीं है ।

(17) घट जीवन नहीं पर जीवन का धारक जरूर है,
परमेश्वर तथा प्रकृति की शक्ति की अभिव्यक्ति का माध्यम है ।
इसकी शुद्धता तथा पवित्रता के बिना दैवी गुणों का विकास हो नहीं सकता ।
पिंजड़ा जितना मजबूत होता है ।
सुग्गा उतना ही सुरक्षित रहता है ।

●●●

परिचय

नाम : **विपिन विप्लवी**

पिता का नाम : स्व० डा० बच्चू नारायण सिंह

शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा), बी.एल., डिप-एन-एड, एच.एम.बी.

सेवा : जिला उपनिर्वाचन पदाधिकारी से सेवानिवृत ।

प्रकाशन : चीनी सप्तकी, आवाज और क्रांति, किसान सम्मेलन, चुनाव की गंभीर चुनौतियाँ, पावन स्मृति रेखा, फलेशेज विफोर डान, सिंगर्स ओल्ड एन्ड न्यू (प्रकाश्य), कई पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ, अन्वेषण नालन्दा, अंक-5 का संपादन

संप्रति : संपादक, बौद्धिक मंच संवाद, देसरी (वैशाली)

संपर्क : शैल सुविप्रा सदन, पटेल कॉलोनी, पत्रा०-देसरी पिन-844504

•••

सियासती पतंगबाजी

हवा है न पानी बढ़े जा रहे हैं
नदी है न नाला बहे जा रहे हैं,
नेता विधाता कि मशहूर मंत्री
पोंगा पंडित भारी, न माला न यंत्री,
रूकेंगे कहां पर न कोई ठिकाना
लुककर औ, छिपकर बढ़ाते खजाना,
वादा है करने को जनता की सेवा,
करम में लिखा है घोटाले का मेवा,
करे क्या जो देशप्रेम न सीखा संवारा
निकम्मे गिरोहों को धांधली है गंवारा,

वे चलते और फिरते हैं बाघ शेर बन कर
नैतिक तकाजे का नंगा हलन कर
न बिजली, न पानी न राशन समय पर
सभी का है मालिक तृत्रासुर भयंकर,
जो वादे ही वादे करता भाषणों में
मकड़जाती कीड़े घुसे शासनों में,
मांगे किसी की न कोई सुनने वाला
चमचों की चकल्लस सदा गुनने वाला,
झूठ फरेब की सारी सीमा को तोड़ा
दिन रात नाता अपराधी से जोड़ा,
जरा आँख खोलो, देखो सब नजारा
नहीं लगता होगा सज्जन का गुजारा,
हवा, पानी मिट्टी सब में है, प्रदूषण
भ्रष्टों के हैं दादा बने कुलभूषण ।

•••

कैसा रद्दोबदल

यह कौन समय आया
यह कैसा रस्म लाया
रहमत के उसूलों को
कुछ भी समझ न पाया,

जो चलते गली कुची में
शेरे बबर-सा बन कर
वे अदबों से हैं गुजरते
चुहे औ बिल्ली बनकर,

वे खुल के तोड़ते हैं
अशराफियत का बन्धन
दिल में घना अंधेरा
चेहरे पर चकमक चन्दन,

रचते हैं और रचाते
लहिंगरों का आशियाना
लूटते हैं और लुटाते
लूटा हुआ खजाना,

तोड़ते हैं सारे नियमन
इंसानियत के धागे
भांजते हैं भाषणों में
'गरीब परवर जागे',

मिलती है अनेक खबरें
कुदरत से हैं वे जालिम
दिखाते हैं जुल्मी जलवे
जंगल में पाये तालीम,

चाहें तो लूट लें वे
मुल्क औ जहां चमन को
मुद्दा बनाते घुपचुप
चंगेज-सा दमन को,

है कौन वैसी ताकत
थामे जो उनकी डोरी
बेफेरे जानवरों की
चलती है सीनाजोरी,

कोई भी क्या करेगा
वो वोट लूट के लाये
चुनाव से ही जीते
प्रमाणपत्र पाये,

करेगा कौन शिकवा
बजता है उनका बाजा
घोटालों के धंधे से
भेड़िये बने हैं राजा,

कसे जो कोई शिंकजा
तो उल्टे करे शैतानी
धमकाता है सभी को
कर बौछार वाणी,

आवाम कहीं न ऐसा
उस्ताद ही न पाया
पर समझ का था फेरा
अजगर सरक के आया,

तो यारों सभी मिलो अब
बिरहा नया ही गाओ
न जन्नत मिला तो
जहन्नुम से बचाओ,

अपनाओ अभी भी
अकलियत की राहें
यही है हर जन की
उम्मीद की राहें,

नहीं होगा बैमान
हमारा करिंदा
तो करेगा जहां में
न सबको शर्मिन्दा,

किसी ने ना जाना
जब जनता रोती भूखी
तो लूटा क्यूँ खजाना
किया क्यों बेरूखी,

न सोचा न समझा
तो खाया सब मुंहकी
जले दूध की किस्मत
गड्ढे में लुढ़की,

बातों की बातें हैं
बड़ी हल्की फुलकी
वो है आलिम फाजिल
विषय-बदसलूकी ।

•••

परिचय

नाम : **डा० शिवनारायण**

पिता का नाम : स्व० श्री कमलेश्वरी सिंह

जन्म : 19 जनवरी, 1962

शिक्षा : एम०ए० (हिन्दी, पटना विश्व०) पीएचडी० (रांची विश्व०), बी०एड० (बिहार विश्व०)

मानद : विद्या वाचस्पति, विद्यासागर; दोनों उपाधियाँ विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर से ।

संपादन : अनेक व्यावसायिक एवं साहित्यिक पत्रिकाओं;–'नई भूमिका' (मासिक, कटिहार), शिक्षा डाइजेस्ट (मासिक, पटना) एवं 'देखा-लेखा' (साप्ताहिक, पटना); का छह वर्षों तक कुशल संपादन अनेक अपर साहित्यिक पत्रिकाओं के विशेषाकों का अतिथि-संपादन ।

प्रकाशन : विविध विधाओं में चार ग्रंथ, अनेक पुस्तकों में कविता, लघुकथा, आलोचनात्मक निबंध, कहानी आदि का प्रकाशन, तीन ग्रंथ शीघ्र प्रकाश्य ।

सम्प्रति : व्याख्याता, हिन्दी विभाग, आर.आर.एस. कॉलेज, मोकामा

संपर्क : इन्दिरा नगर, पटना-800 001

•••

मौसम के बदलने से

ग्रीष्म तपने लगा है
धूप की आँच में
देह की गंध सोंधी हो गई है,
गुलमोहर के दहकते अंगार-से फूलों में
किन्हीं उत्तप्त आँखों की

रक्तिम उष्मा दरकने लगी है
और आँगन में रखे गमलों में
अंग्रेजी फूलों के रंगों की उजास
किसी के गुलाबी ख्याल में
जाने कितने अर्थ भरने लगी है !

एक ग्रीष्म के तपने से
कितना कुछ बदल जाता है !
तुम्हारे घर की/पिछली बालकनी से लगी
रेलिंग के दाएँ छोर पर बैठी
एहसास की शीतलता में भी
तपिश की सेंध लगी होगी,
मिट गई होगी वहाँ से
किसी की उंगलियों के स्पर्श की स्मृति,
बंद हो गया होगा वहाँ
अलस्सुबह गौरैयों का फुदकना
और/किसी अलसाई साँझ से चुप-चुप
ओझिल नजरों का
चौकस नजरों से टकराना !

सच !
एक मौसम के बदलने से
कितना कुछ बदल जाता है !
बदल जाती है शामों की खुशबू
गंधिल एहसासों के रंग
मुठ्ठी भर नजरों की प्यास
और/भर आसमान
ख्यालों के गुलाबी वृत्त
गंध फैले जीवन के अमृत !

•••

महानगर

कंक्रीटों के इस घने जंगल में –
नहीं पहुँचती जहाँ
सूरज की उत्तप्त किरणें,
नहीं झाँकती जहाँ
चाँद की चंदन सनी उजास,
नहीं सुन पड़ती जहाँ
अलस्सुबह चिड़ियों की
चहचह की कोरस धुन,
नहीं सरसराती जहाँ
गंध भरी पूर्वा हवाओं की मुसकान
और–
नहीं भरती जहाँ
जीवन में किसी मौसम की गुलाबी खुनकी !
मुश्किल है करना
परतों में अलंकृत स्नेहिल चेहरों की शिनाख्त,
मुश्किल है खोजना
धुआँते रिश्तों के मलबे तले
रुहानी प्रेम का क्वाँरापन,
मुश्किल है पढ़ना
बहना की शून्य टेरती पलकों में
एक कोई संतृप्त छवि की चाह
और/मुश्किल है रच लें एक नया
शामों की खुशबू में सरसों का गीत !
भोर के सपनों पर
है सख्त यहाँ पहरा
फूलों पर है काँटों का घेरा।
चलो–
चलें दूर कहीं
कंक्रीटों के इस घने जंगल से,
अपने ही काम आए
पड़ोसियों के दंगल से !

•••

फरवरी की साँझ

पलंग के पाये को
चिकनाते बढ़ई के हाथ
जब रंदे पर सरल रैखिक गति में
आगे-पीछे को फिसलते हों लगातार
तब ढलते दोपहर की पूर्वा हवा
औचक नारियल की सुलझी शाखाओं पर थिर
निहारने लगती है–
बढ़ई के हाथों पूर्ण होते
सृजन के उस एकांत को,
जो साक्षी बनेगा
निविड़ निशा के अभिसार का;
और तब–
चहचहाने लगते हैं पाँत में उड़ते पंछी,
सरसराने लगते हैं पास पेड़ों के पीले पत्ते,
शोर मचाने लगते हैं
नरम अलसाई धूप में क्रिकेट खेलते बच्चे
और/अठखेलियाँ करने लगती हैं
मौसम की मखमली खुनक में
पनघट किनारे किशोरियाँ

बढ़ई के हाथ अब भी
रंदे पर फिसल रहे हैं
हौले-हौले........

कि–
दूर पहाड़ी के अंचल से
पूर्वार्द्ध फरवरी की साँझ
अपने में सम्पूर्ण सृष्टि को समेटती
उतर रही है धीरे-धीरे........ ।

•••

परिचय

नाम	:	**डा० सूर्यदेव सिंह**
पिता का नाम	:	श्री धरिक्षण सिंह
माता का नाम	:	श्रीमती बेचन कुँअर
जन्म	:	1 जनवरी, 1951
शिक्षा	:	एम.ए., बी.एड. विधि(पटना वि. वि.) विद्यावाचस्पति विक्रमशीला विद्यापीठ (भागलपुर)
प्रकाशन	:	फुटकर कविताएँ हिन्दी मगही-भोजपुरी, उर्दू (तीन जिल्दों में) 'च्यवनांचल' का सम्पादन
सम्प्रति	:	जवाहर नवोदय विद्यालय, गोड्डा, में शिक्षक (हिन्दी), राष्ट्रीय विचार मंच का आजीवन सदस्य
आत्मकथ्य	:	जीवन की वेदना परिपक्व होती है तो जीवन को एक नई दिशा मिलती है अम्मा की गोद में पलकर काव्य-प्रभा छिटकती है ।
संपर्क	:	ग्राम.पत्रा. कोड़रा, थाना-पालीगंज, जिला-पटना

गीत

जग में भला सदा होता है
कलम कुसुम -सा खिलते रहना ।
और पतित-पावन बनकर अति
दुखित सांस से मिलते रहना ।
शून्य गगन को निज क्षमता भर
मधुर गंध से भरते रहना ।
दूर क्षितिज तक बिना रूके ही
सूक्ष्म वायु पर तिरते रहना ।।
मणि का काम बिना बाती के
बिना तेल के बलते रहना ।
दिग्दिगंत में व्याप्त तमिस्त्रा
को प्रमुदित मन छलते रहना ।।

●●●

कवि स्व० भोला प्रसाद सिंह 'तोमर' की स्मृति में

तुम कवि को सम्मान नहीं दो
तो कवि, कवि क्या रह न सकेगा ?
सुनो न वाणी उसकी तो क्या
कवि सबका दुख कह न सकेगा ?

वाणी कवि की मुक्त निरंतर
परममुक्त कवि का सुंदर मन ।
जन-गण के जीवन पर अर्पित
है कवि का सुंदरतम जीवन ।।
जन-गण जीवन की अनुभूति
कवि क्या सच-सच कह न सकेगा ?
सच पूछो तो अनुभूति को
कहे बिना वह रह न सकेगा ।।

चाहे विष की घूँट पिला दो
पर कवि कवि है, मर न सकेगा ।
कलम अस्त्र है कवि क्षत्रीय
कलम धरा पर धर न सकेगा ।
कवि तो अमर पुत्र विधि का है
परवशता वह सह न सकेगा ।।

अमर कलम वरदान मिला है
कवि श्रेष्ठ धरा पर विधि से ।
अभिव्यक्ति का सतत पुजारी,
मिला श्रेष्ठ वर करुणा निधि से ।।
इसीलिए जज अभिव्यक्ति-पथ
अपर मार्ग वह गह न सकेगा ।।

•••

आकांक्षा

मुझे चाहिए भावसुधा, प्रेरणा अनंत कोई दे ।
मुझसे मेरा रक्त-मांस-भज्जा भी कोई ले ले ।।

•••

अभिलाषा

ऐसी कोई बात न होती ।
बंद कपाटों में हो-होकर
गंगा-यमुना-धार बहाना ।
नयनों के श्यामल कोरों से
कज्जल मोती का ढलकाना
काश, प्रिये उस शिशिर काल के
पूर्व कभी बरसात न होती ।
ऐसी .... ।।
अकसर मन का दर्द दबाकर
अश्रु घुँट पीकर हँस देना ।
उत्कंठा को दफनाकर द्रुत
मौनभाव धारण कर लेना ।।
मंजुल सपनों के शतदल पर
वक्र किसी की घात न होती ।।
ऐसी .... ।।
अरूण अधर-पल्लव के कम्पन
किंचित अर्थ व्यक्त कर पाते ।
नम पलकें, अवनत सिर, आंसू,
मन के गहन अर्थ समझाते ।।
कमल कोष से हास छलकता
सिसकी की सौगात न होती ।
ऐसी .... ।।
पिछले पहर रात में आना
स्पप्न पेंग में मुझे झुलाना ।
स्वर्गिक सुख का साज सजाकर
भ्रूनिपात कर मुझे बुलाना
उन मंजुल नयनों में दुर्वह
दर्दों की बारात न होती ।
ऐसी .... ।।

•••

गीत

वतन की धूल है चंदन, वतन के फूल हैं वंदन ।
कर रहा हूँ इसलिए भारत का अभिनंदन ।
इसी मिट्टी में जन्मे हैं हजारों लाल माता के ।
फिरी हैं ऊँगलियाँ अतिस्नेह में सनकर विधाता की ।

है शारदा वीणा बजाती ज्ञान की प्रतिपल ।
सुनाती शौर्य की गाथा सदा बहती नदी कलकल ।।

गायन कर रहे पिक-मोर-दादुर-देव जिस भू की ।
है महिमा इतनी इस जग में न जाने और किस भू की ।।

इसी की धूल में खेले कन्हैया-शम्भु-रघुनंदन ।
जलद अभिषेक करते हैं, जलधि करता पदवंदन ।।

•••

शायरी

मत पूछ मुझसे अब हमारा हाल जिंदगी ।
मर-मर के भी आती रही है ख्याल जिंदगी ।।
किया होता, गुनाहों का कोई तो सिलसिला होता ।
गुनाहों से अजग होकर, गुनाहगारो में शामिल हूँ ।।
क्या गलत है फूल से खूश्बू की चाहत ।
ये ओर बात है, चुभन काँटों की झेलीं हमने ।।

•••

परिचय

नाम : **सरिता त्यागी**
पति का नाम : श्री वृजेश कुमार त्यागी
जन्म : 3 मार्च, 1947
शिक्षा : स्नातक, आगरा विश्वविद्यालय
अभिरूचि : लेखन, कढ़ाई, पेटिंग, बागवानी
आत्म कथ्य : घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियों के कारण कलम से नाता टूटने के बाद भी विचारों में ज्वार भाटे सर्वदा उठते रहे और आज इन विचार तन्त्रों ने पन्नों पर कविता का रूप धारण कर लिया ।
सम्पर्क : द्वारा-वृजेश कुमार त्यागी, कार्यपालक अभियंता
न्यू स्वर्ण रेखा परियोजना कॉलोनी
आदित्यपुर, जमशेदपुर, पूर्वी जमशेदपुर

•••

लहू लुहान दहलीज

आँखों में उगे नाखूनों से,
गलियों में चौराहों में,
यहाँ तक कि बसों में भी
खुरच देते हो देह
जीभ के पंजों से भी
घायल हुई युवा देह
अपनी दहलीज पर
पाँव धरते ही
इन्हें भीतर समेट लेते हो
पर अब छुपाने से क्या लाभ ?
तुम्हारी दहलीज तो
पहले ही लहूलुहान पड़ी है ।

•••

अग्नि-परीक्षा

मैं अग्नि परीक्षा नहीं दूँगी
और ना ही धरती में समाऊँगी
ये परीक्षाएँ मैं क्यों दूँ ?
मैं लक्ष्मण रेखा से नहीं डरती
वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती
मेरे पाँव पड़ते ही वह विलीन हो जाएगी
मैं स्वयं खीचूंगी अपने लिए सीमा रेखा
मुझे मेरी सीमा से कोई डिगा नहीं सकता
क्योंकि मुझमें शक्ति है आत्म बल की
मैंने सत्य का दामन सर्वदा थामा है
विश्वास है
एक दिन असत्य पर विजय पाऊँगी ।

यादें

हर दिन एक छोटी सी चिड़िया बन
फुदकता हुआ गुजर जाता है मेरे उपर से
सुरमई आकाश से निकला दिन
छोटे-छोटे पंखों के टुकड़े
यादों के लिए छोड़ जाता है
और मैं इन पंखों को
एक आकार देना आरम्भ कर देती हूँ
जीवन के पन्ने के हर दिन को
इन पंखों से सजाती हूँ
जब तेज झोंका आता है
इन पन्नों के साथ
ये पंख भी फड़फड़ाते हैं
परन्तु ये पंख इस कदर
चिपक गये हैं मुझसे
अब तूफान भी इन्हें
उखाड़ नहीं सकता
मेरे हाथों गजब की
शक्ति आ जाती है
और मैं, हर पन्ना कस कर थाम लेती हूँ ।

•••

पीठ में चाकू

क्या फर्क है मनुष्य और कुत्ता में
जिसने उसका पेट भरा, उसी का हो गया
भूखा होने पर बेवफा हो उठा
ओर गुर्राया
इंसानियत के खून में सने
टुकड़े उसके समक्ष डाले गये
वो जीभ निकाले निवाले में
इंसानियत को लील गया
पर अफसोस
अपूर्ण यहाँ भी रह गया
कुत्ते की भाँति
आमने-सामने न हो सका
अवसर मिलते ही
पीठ में चाकू भोंक गया ।

●●●

'मृग तृष्णा'

जब भी मेरा समय
रेगिस्तान से गुजरता
मृग तृष्णा से घिर जाती
चिपके, पपड़ाते ओठ
पानी बुदबुदाते
हाथ चुल्लू बना लेते
समीप पहुँचने पर
पानी दूर खड़ा ललचाता
मृग तृष्णा के पीछे
दौड़ते-दौड़ते पैर लड़खड़ाने लगे
समय ने रेगिस्तान पार किया
मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट लौट आई
परन्तु, समय से आँख न मिला सकी
रेगिस्तान तो घिसटते हुए
पार किया था न ।

●●●

शब्द की गरिमा

हमने उछाल दिये शब्द बिन सोचे
वे इश्तिहार बन
हमारे जीवन की दीवारों पर चिपक गये
कुछ पत्थर और शोले बन
हम पर ही बरस गये
तब हमारी समझ में आया
हर शब्द रखता है अपना स्थान
वह उसमें ही सजता है
अपने समय और स्थान से खिसक जाने पर
शब्द खो देता है अपनी गरिमा ।

●●●

नारी

मैं नारी हूँ क्षमा की प्रतिमूर्ति
मेरी जमीं पर आने से
मेरे अपनों को ही दु:ख हुआ
मेरी किलकारियों पर
अपनों की आँखें छलक आईं
मेरे फूल बनने पर
मेरे अपने मुर्झाने लगे
मुझे बार-बार
भविष्य के काँटों की याद दिलाने लगे
मेरा भूत, वर्तमान व भविष्य
दूसरों ने छीन लिया
इन त्रिकालों में से यदि
मैंने कुछ दिन चुराये
तो वे मरे अपनों को ही नहीं भाये
मैंने अपना अस्तित्व नकार
दूसरों का ओढ़ लिया
दूसरों के अस्तित्व में मैं
ऐसी रच बस गई
उसकी अनुपस्थिति में
अपने को
उघड़ा व बेसहारा महसूस करती हूँ ।

●●●

परिचय

नाम	:	**सिद्धेश्वर**
पिता का नाम	:	श्री इन्द्रदेव प्रसाद
माता का नाम	:	स्व० फूलभार प्रसाद
जन्म	:	18 मई, 1941
जन्म स्थान	:	ग्राम+पत्रा-बसनियावाँ, जिला-नालन्दा
शैक्षणिक योग्यता	:	एम०ए०, पटना विश्वविद्यालय
प्रकाशन	:	विविध विधाओं में आलोचनात्मक परिचयात्मक निबंध-संग्रह तथा निर्देशिका का प्रकाशन, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाएँ प्रकाशित, प्रति वर्ष राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से स्मारिका का प्रकाशन, काव्य-संग्रह 'यादें' का संपादक ।
सम्मान	:	अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा 1994 में 'डा० अम्बेदकर फेलोशिप' से सम्मानित तथा 1994 में लखनऊ में सामाजिक सेवाओं के लिए सम्मानित ।
सम्प्रति	:	वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग, राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव
संपर्क	:	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001 दूरभाष : 228519
आत्मकथ्य	:	जीवंत जिन्दगी की सार्थकता संघर्ष में, जद्दोजहद में तथा अपनी अस्मिता संजोने में है । इसलिए बेहतर समाज और श्रेष्ठतर मनुष्य होने के सपनों को साकार करने हेतु समय रहते अपनी क्षमता के अनुसार समाज तथा देश के हित में कुछ कर दिखाना हमारा नैतिक दायित्व बनता है ।

•••

शिकायत फितरत की

हवा ने कहा –
बचने के लिए,
प्रदूषण से हमने
धूएं को दूर भगाया
किसी का क्या बिगाड़ा ?

पानी ने कहा –
हमारा क्या गुनाह
जो हमने पानी दिया
सुखी नदी को ।

है जायज शिकायत
बादल की –
उड़ेलकर पानी
सोंधी गंध दी हमने
सुखी धरा को ।

मिट्टी भी कब
चुप रहने वाली थी –
सुनाई उसने
अपनी दास्तान
आत्मसात कर पानी
लवण दिया हमने
पेड़-पौधों को
भोजन के लिए
जिससे वे बढ़े
और फूल-फल दिए ।

आवाज आई
तपती धूप की –

मैंने उष्मा की
हंसी जगायी

पेड़-पौधों में
क्लोराफिल देकर
हरियाली लायी

पेड़ पौधों ने
पत्ते हिलाकर

किया इशारा
शिकायत के स्वर में –

हरियाली बिखेरकर
प्रकृति में हमने
भूवन को सजाया
आक्सीजन भेजकर
मानव को बचाया ।

फिर सबों ने मिलकर कहा –
मानुष भाई
दिन-रात प्रदूषण फैलाकर
आखिर तुमने क्या पाया ?
बल्कि सच तो यह है कि
अपने आप मरने का
तू ने पैगाम लाया ।

सबों ने समझाया अभी वक्त है –

हम सब की तरह
तुम भी प्रकृति को संवारने में
योगदान करो और
समस्त प्राणी-जगत को
विनाश के गर्त में
जाने से बचाओ ।

•••

नई दिशा की तलाश

आजादी के पूर्व का काल
बना अब सिर्फ इतिहास
क्योंकि भूल जाते जो बातें
वे ही हैं सच्चा इतिहास

1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन'
देश के तरूणों का बलिदान
जनता की आहूति, लाखों कुरबान
देशवासियों के सपने, यही है इतिहास

पूरे हुए हैं कौन से सपने ?
और कितना बलिदान फले
आजाद भारत
गुलाम भारत से भी बदनाम हुए

आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक
सभी क्षेत्रों में असंतुलन, स्खलन
काले नाग की तरह
जनता को हैं जकड़े

भ्रष्टाचार घोटाले-दर-घोटाले
अपहरण और बलात्कार
इन सबों से जनता है परेशान
कौन है जिम्मेवार ? यह सवाल आपके सामने

साहित्य हो या इतिहास
संस्कृति हो या समाज
पूरे जन-समुदाय के लिए
एक नई दिशा की है तलाश ।

•••

आज के लोग

कैसे हैं आज के लोग
जो हर किसी को
अच्छा कहते हैं
पर उसके मौत के बाद

यहाँ के लोग
जिन्हें हम इंसान कहते हैं
सहानुभूति जताने के लिए
हर पल मौके की तलाश में रहते हैं ।

आप प्रसन्नचित्त न रहिए
न खुशी का इजहार कीजिए
केवल अपनी व्यथा सुनाइए
और उन्हें खुश होने का मौका दीजिए ।

यदि आप खुश होंगे
देखकर खुश आप पर वे चौकेंगे
और वे तबतक चौकते रहेंगे
जब तक आप रो न दें ।

पर क्यों चौंकते आप ?
यह सब सुनकर जनाब
क्या आप नहीं जानते ?
ऐसे ही होते हैं आज के लोग ।

•••

परिचय

नाम	:	**राज कुमार 'प्रेमी'**
जन्म	:	23 अप्रैल, 1945
स्थाई पता	:	ग्राम-लक्ष्मणपुर, पत्रालय-कमला गोपालपुर, पटना
सेवा	:	प्रधान सहायक, आयकर विभाग
शिक्षा	:	स्नातक, आई. आई. टी.
अभिरूचि	:	लेखन, नाटक, गायन, अभिनय एवं निर्देशन
प्रकाशन	:	सबरस गाना (हिन्दी में), गीत निर्झर (हिन्दी-मगही-भोजपुरी में) दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित, कई पुस्तकें शीघ्र प्रकाश्य
सम्मान	:	1. बिहार दलित साहित्यकार अकादमी (जमालपुर) द्वारा डा० अम्बेदकर फैलोशिप 1994 से सम्मानित 2. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन (भोपाल) द्वारा 1996 में 'समन्वय श्री' का अलंकरण 3. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् (दिल्ली) द्वारा शत-प्रतिशत हिन्दी में कार्य के प्रशस्ति पत्र
संपर्क	:	रमना रोड, पटना - 800 004

•••

"डा० भोला प्र० सिंह तोमर"

(जीवन काल में उनके जन्म दिवस पर)

हिन्दी जगत के मुक्त गगन में, चमका है एक नया सितारा,
डा० भोला प्र० सिंह तोमर, जो हमसब का है अति प्यारा ।
धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, बहुगुणी, बहुकर्मी, नेक इंसान,
सामाजिक, है पारिवारिक, व्यवहारिक सरस्वती संतान ।
पत्रकार, साहित्यकार, लेखक, समीक्षक, लघुकथाकार,
लोकप्रिय कवि-गीतकार, पाया जीवन में कभी न हार ।
सदा रहा साहित्य सृजन में, कर्म से जो अभियंता होकर,
हिन्दी को किया आत्म समपर्ण, सारी अपनी खुशियाँ खोकर ।

सार्थक हुआ परिश्रम अब, "साहित्यनिष्ठा" के वाहक का,
विद्यावाचस्पति से हुआ, अलंकरण इस धावक का ।
तुम हर रूप में विचरण करते, साथी, सहकर्मी ओ मेली,
सत्य गुरू का धर्म निभाते, अपने आप में अतिशय केली ।
हार्दिक शुभकामनाएँ मेरी, इसी तरह तुम बढ़ते जाओ,
राहें हों आसान तुम्हारी, उच्च शिखर पर चढ़ते जाओ ।
कोटि-कोटि देता हूँ बधाई, हे अग्रज, हे शद्धेय गुरूवर,
'प्रेमी' का प्रेमालिंगन, स्वीकार करो हे प्रियवर कविवर ।

●●●

तोमर अपना देश गया

(उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि)

हिन्दी जगत का प्यारा तोता, उड़ा आज सबको खला,
चुना साहित्यिक दानों को था, जो-जो उसको लगा भला,
मन के सपने मन में रख, इस दुनियाँ से विदा लिया,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

भोला, पर नहीं डोला था, लिए संघर्षों का झोला था,
इन्सा था, इन्सा का पट्ठा, सहमिल्लू, मुँहबोला था,
मिलजुलकर चलना सिखलाकर, स्वयं अकेला चला गया,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

कोरा हृदय, डोरा था, वह मिल-मिल सबको जोड़ा था,
अपना, नहीं पराया समझा, नहीं किसी को छोड़ा था,
घोड़ा था साहित्य जगत का, चला, सदा बढ़ता गया,
हम लोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

वह सबका था, सब थे उसके, नहीं किसी को छोड़ा था,
सबके दरवाजे पर जाता, कभी नहीं मुख मोड़ा था,
अनुचित पर झट कह देता था, गलत नहीं बर्दाश्त किया,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

सद्भावी था, मानवप्रेमी, प्यार का हाथ बढ़ाया था,
जो मिलने जाता था उसतक, उसको गले लगाया था,
लालच-मोह की दुनियाँ में, निःस्वार्थ बना चलता गया
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

सच्चरित्र, मृदुभाषी, हंसमुख, मिलनसार सद्भागी था,
आकर्षक तन-मन का धारक, स्वच्छ हृदय का स्वामी था,
छल प्रपंच से रहित, जुझारू सेवक बन बढ़ता गया,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

अन्तिम समय बीमार पड़ा, पर याद सभी उसको थे आते,
जो जाया करते थे उस तक, प्यार वही, उसका थे पाते,
अपनो की यादों में डूबा, अन्त समय मुँह मोड़ गया,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

जाओ हे कविवर 'तोमर', बैकुण्ठ बास कर अजर रहो,
चाँद-सूरज-सम चमको तुम, साहित्यलोक में अमर रहो,
देता है श्रद्धांजलि 'प्रेमी', चर्चा तेरी रहे सदा,
हमलोगों का प्यारा साथी, तोमर अपना देश गया ।

•••

भाभी की चिटठ्ी

पत्नी बोली
अजी सुनते हो
मेरी भाभी की
चिटठी आई है
बच्ची जन कर
नई खुशियाँ लाई है
पति ने कहा
लिख दो उनको
हमारी यह
आखरी बधाई है
आठ-आठ बच्चियाँ जनी
फिर भी
नहीं अघाई है ?
क्या उनके
परिवार की सामत आई है ?
बेवजह
पानी में क्यों आग लगाई है ?
पत्नी बोली
बन्द करो यह बकवास
स्वयं को आठ बच्चे पैदा कर
दूसरे को दुषते हो ?
अभी भी होश में नहीं आये
जब चाहा
घर में घुँसते हो
जनसंख्या का
इतना ही ख्याल है तो
बार-बार
मुझसे क्यों जूझते हो ?
पति ने मुस्कुराकर कहा
अरी भाग्यवान,
मेरे तो आठ आठ बेटे हैं
समझो
आगरे के पेठे हैं
बेटे की शादियाँ रचाऊँगा
मनचाहा दहेज पाऊँगा
तुम्हारे भैया जैसे
आँसू नहीं बहाऊँगा
बैठ कर मौज उड़ाऊँगा ।
पत्नी बोली
देखो
अब आगे कुछ मत बोलो
नहीं तो
फिर अपना रूप दिखाऊँगी
उस दिन का
याद है न ?
आज तो
रोते नहीं अघाऊँगी
प्रति सटक सीताराम
कहा
भाभी की चिटठ्ी बड़ी प्यारी है
हमारे घरों में
खुशियाँ लाई
हम उनके अभारी हैं ।

•••

परिचय

नाम : **चन्द्रप्रकाश**

पिता का नाम : स्व० रामचन्द्र

जन्म : 6 फरवरी, 1934

शिक्षा : बी०ए० आनर्स, एम०एड०, सी०एल०एस०सी०

प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ, विद्यालय की पत्रिका 'किरण' का सम्पादन

प्रसारण : आकाशवाणी पटना से स्कूल शिक्षा प्रसारण में 30 वर्षों तक योगदान

आत्मकथ्य : ग्रामीण जीवन को आदर्श मानता हूँ, धार्मिक कृत्यों से अधिक उसके व्यवहारिक पक्ष एवं आचरण पर बल देता हूँ।

सेवा : पटना के दयान्नद विद्यालय में 41 वर्ष तक शिक्षण कार्य तथा प्राचार्य के पद पर सेवानिवृत ।

सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन

सम्पर्क : माधुरी भवन, पुरन्दरपुर, पटना-1

आत्मघात

मानव तेरा क्या विश्वास
अन्तर में भिन्न भाव तुम्हारे
कर्म-वचन में साम्य नहीं कुछ,
जीवन में फिर सफल बनो क्यों ?
बोलो जो भी बीच जनों के
उसपर चलना दृढ़ बन सीखो
तभी तो जीवन सफल बनेगा
जन-जन में फिर नाम चलेगा ।
कहकर और विश्वास दिलाकर
काम न करना आत्मघात है
निज की हानि निश्चय ही है
अन्यों को भी हानि बड़ा है ।
अन्तर में जो भाव तुम्हारे
प्रकट करो निश्चय बिन डर के
निर्मल होगा चरित्र तुम्हारा
जन-जग में फिर मान बढ़ेगा ।

•••

तीसरी आजादी

आजादी की अर्द्धशती के अवसर पर
मैं देख रहा हूँ तीसरी आजादी आने वाली है
भरतवंशियों को हर्षाने वाली है ।
आजादी की पहली लड़ाई विदेशियों के विरूद्ध थी
दूसरी लड़ाई तानाशाही से थी आजादी की अब यह तीसरी लड़ाई
तुष्टीकरण की नीति के विरूद्ध है चापलूसी के खिलाफ है ।
अब जनता ऊब चुकी है सहते-सहते परेशान है
लड़ते-लड़ते बेहाल है उधर घोटालाबाज मालामाल है ।
उसकी आँखें अब खुल चुकी हैं भण्डा फूट चुका है
सत्ता के लोलुप मुट्ठी भर शोषकों ने
सीधे-सादे देशवासियों को
नाना तिकड़मों से फूट डालकर आपस में लड़ाकर
शक्ति हीन बनाने में शनैः शनै सफलता पा ली है
पर सच्चाई सच्चाई है देश की जनता को आभास हो गया है
स्वार्थी नेता अपनी गद्दी बरकरार रखने की चिन्ता से अभिभूत है ।
जनता की सुख-सुविधा की, नेताओं को न कभी परवाह रही है
और न कभी रहेगी उन्हें तो अपना उल्लू सीधा करना है ।
इतिहास साक्षी है अत्याचारी-दुराचारी
कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ते हैं छाते हैं हस्ती बनाते हैं
पर कठोर समय के आतप को सह नहीं पाते हैं, अंत में मार खाते हैं ।
मायावी सत्ताधारियों को अपने अविवेकपूर्ण कार्यों के परिणाम स्वरूप
सत्ता के हाथ धोना है ।
'सत्यमेव जयते - के समक्ष घुटने टेकना है ।
तीसरी आजादी के स्वागत को जागरुक जनता तत्पर है
मायाजाल के दिन लद चुके हैं मोह का मोम गल चुका है
ठोस राष्ट्रीयता के रवि का उदय होने वाला है
क्षितिज पर अरूणोदय हो चुका है लालिमा दिखायी पड़ती है ।
तीसरी आजादी प्राप्त करने से जागी हुई जनता अब रुक नहीं सकती
दीन-दुखियों की असली आजादी तीसरी आजादी के रूप में आने वाली है ।
सत्याग्रहियों, क्रांतिकारियों, बलिदानियों की
सुखदायी, स्थायी ।
अतः सिंहासन खाली करो आँधी तुम्हें उड़ा ले जायगी ।

•••

ईर्ष्याग्नि

आग जलाती है किसको ?
जीव-काया को खर-पातों को चिथड़ों को
सूखी चीजों को जलावन को महलों को कुटियों को
पर आत्मा कुण्ठित होती है ईर्ष्याग्नि से ।
दावानल से भी प्रचण्ड है अग्नि यह, ईर्ष्याग्नि
बड़वानल भी धीमा है जठराग्नि भी मन्द है
इस ईर्ष्याग्नि के सामने
मानव झुलसता है देहमान्न जलती है
इस अग्नि के प्रज्वलित होने पर ।
आत्मा तपती है कलुषित होती है
बिगड़ जाता है लोक-परलोक प्राणियों का ।
ईर्ष्याग्नि महातीव्र है
इसकी एक चिनगारी से देह पिंजर का पवित्र स्वामी
संतृप्त होता है मलिन बनता है ।
मानव ईर्ष्याग्नि में जलते समय आग पर चढ़ी
हाड़ी के जल के समान विदग्ध हो जाता है सूखता है, हल्का होता है
और अंत में वायु में विलीन हो अस्तित्वहीन हो जाता है
ऐश्वर्य खो बैठता है ।

प्रगति गीत

बढ़े चलो तुम चले चलो तुम, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।
जीवन के पथ पर चले चलो, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।।
वीर जनक के वीर पुत्र तुम, माँ भारत की आशा तुम ।
सत्य मार्ग के पोषक तुम, मानवता के रक्षक तुम ।।
बढ़े चलो तुम चले चलो तुम, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।
रिपु का मर्दन कर चले चलो, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।।
गर्जन सिन्धु किया करें, काले बादल उठा करें ।
नग भी पक्ष में डटा करें, चाहे हिंसक बढ़ा करे ।।
बढ़े चलो तुम चले चलो तुम, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।
आभा फैलाते चले चलो, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।।
झुको नहीं तुम रूको नहीं, कांटों से भी डरो नहीं ।
घोर निशा से कांपों नहीं, तोपों से भी भागो नहीं ।।
बढ़े चलो तुम चलो चलो तुम, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।
बस मानवता हित चले चलो, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।।
कठिन काम को किया करो, मंत्र संगठन पढ़ा करो ।
आराम हराम जपा करो, देश हित बस जिया करो ।।
बढ़े चलो तुम चले चलो तुम, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।
राष्ट्रोन्नतिपथ चले चलो, बढ़े चलो तुम बढ़े चलो ।।

परिचय

नाम : **महेन्द्र प्रसाद सिन्हा**
पिता का नाम : श्री देव मंगल प्र० सिन्हा
जन्म : 7 जनवरी 1942
स्थायी पता : ग्राम-महुली, पत्रालय-सईथा, जिला-पटना
वर्तमान पता : बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी, सेक्टर-6
एल.आई.जी., फ्लैट-260, लोहियानगर, पटना-20
शिक्षा : एम० ए०
प्रकाशन : कविता, कहानी, निबन्ध, राष्ट्रीय पुरूषों की जीवनी लेखन आदि समय-समय पर स्मारिका एवं शोषित मुक्ति में प्रकाशित
अभिरूचि : अभिनय, कला, सामाजिक कार्य (पटना, पुनपुन पथ महुली ग्राम के सामने पर शहीद राम गोविन्द सिंह का स्मारक निर्माण में सक्रिय योगदान) एवं साहित्य आदि में अभिरूचि
आत्मकथ्य : जीवन जीने की सार्थकता सामाजिक चेतना जगाने तथा समाज सेवा में भी है
सम्पर्क : कार्यालय, वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर, पटना मंडल, पटना-4

मानव

सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी
मानव
चाट रहा है,
जूठे केले का छिलका,
पटना प्लैटफार्म पर बैठ ।
पलक मारते ही,
क्षण भर में,
कुत्ते की झुंड
टूट पड़ते हैं
छीनने के लिए
जूठे केले की छिलकों को ।
धन्य है,

धरती का यह मानव,
लेकिन
इससे अधिक
विडम्बना क्या हो सकती है
प्रकृति का ?
कहने का मात्र शरीर है,
या है कंकाल
या अस्थि पंजर
जीने की चाह है
पर किसलिए ?
कहलाने को तो वह है
अमर पुत्र मानव
जी रहा है
या मर रहा है
दोनों की समान दूरी पर
खड़ा है ।
मानव का यह रूप
जिसमें जीने की
और न मरने की
स्थिति में अंतर है कोई
जीने के लिए
इतना भी क्या
क्या यह मानव नहीं है ?
ठीक इन्हीं जैसे दूसरे मानव,
सूट-बूट में,
और गर्दन में टाई लटकाये
फूले नहीं समाते हैं ।
लगता है धरती का यह मानव
या ईश्वर की प्रतिरूप में
कहता
सम्पूर्ण गौरव की कहानी
सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी ।

•••

परिचय

नाम : **हरीन्द्र कुमार विद्यार्थी**
पिता का नाम : श्री राजेन्द्र कुमार यौधेय
जन्म : 25 दिसम्बर, 1948
शिक्षा : स्नातक
अभिरूचि : लेखन
प्रकाशन : 'दमाही में जोतल आदमी' मगही कविता संग्रह प्रकाशित, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ निरन्तर प्रकाशित ।
संपादन : 'अलका मागधी' आम आदमी, 'मसौढ़ी आवाज' आदि पत्रिकाओं के संपादन से संबद्ध ।
सम्मान : 1996 के लिए भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा "डा. अम्बेदकर फेलोशिप" से सम्मानित ।
आत्मकथ्य : शोषण विहीन समाज का निर्माण करना जीवन का ध्येय ।
सम्प्रति : सदस्य, केन्द्रीय परिषद, जनवादी लेखन संघ तथा संयुक्त सचिव जलेस, बिहार
संपर्क : शांति सदन मार्ग, मीठापुर, पटना-800 001

गजल

कितने अर्सों से है बादल को फफकती धरती
ग्रीष्म की आग में है तपनी औ' धधकती धरती ।
कोई परदेश से मेधों की चूनर लाएगा
जेठ के दरवाजे पे कब से है तकती धरती ।
फिर से पनघट में गूँजेगी चूड़ियों की खन-खन
हर इक शोख हवा की ठिठोली को ठिठकती धरती ।
केवल बगुलों की ही चोचों में न मछलियाँ होंगी
शाख पे चिड़ियों के बसेरे को कसकती धरती ।
उजड़े खेतों में न अब गिद्धों की कतारें होंगी
हाथ में मेंहदी लिए सावन को सिसकती धरती ।
इक-इक बूँद पानी को जहाँ तरसती चिड़िया
उसी अम्बर से उतरी गंगा को ठुनकती धरती ।
फिर कोई फूल न मुरझाये, भूख औ प्यास जले
ऐसी बरसात की आस में है कुंहकती धरती ।

•••

गीत

चीड़ की डाल पर छिटकती हुई चांदनी हो तुम
छुपा के रखे अजन्ता जिसे वो कामिनी हो तुम ।
जिसकी हलचल से है चलती विंध्याचल की हवा
गंध चन्दन की, किसी दुष्यन्त की मानिनी हो तुम ।
जिसकी खुशबू से है टूटती ऋषियों की तपस्या
मौसमे मधुमास की उर्वशी, उन्मादिनी हो तुम ।
सिंध और सतलज या झेलम में कुलाँचे भरती
शान सोहनी की, हीर सी हुर हो नाजनी हो तुम ।
जिसे संगमरमर में सँवारे आगरे की हवा
गंगो-जमुन के अम्बर में सजी दामिनी हो तुम ।
जिसके सिर पर है जड़ा, जगमग हिमालय का मुकुट
वो सुन्दरी महमहा, महजबीं, मंदाकिनी हो तुम ।
अपने दामन में सँजोये देव-पारो की कथा
बगिया टैगोर की, सुभाष की, सुवासिनी हो तुम ।
संग तुंगभद्रा की अदा, हँसती कृष्णा की छटा
नीलगिरी के आँचल में पली सुहागिनी हो तुम ।

नवगीत

सिहके कबूतर, हदसी पंडुकियाँ,
जुल्मी बहेलिया प्रत्यंचा चढ़ाये !
आहत सिद्धार्थ हैं, चुपचाप तकते
कातर नथनों में आँसू सजाये !!
कूड़ों औ कचरों के बागों में ढेर,
नाजुक कलियों के तन अकुलाये !
कहाँ निकलकर अब तैरें मछलियाँ,
घाटों पर घड़ियाल डेरा जमाये !!
सीता के रूदन से आकाश गूँजता,
कौन अब जटायु बन प्राण गँवाये !
भयभीत सुग्रीव मुँह को छुपाये,
कौन अब दशानन का पता बताये !!

लपटों में तिल-तिल जलती पद्मिमनियाँ,
गृहिणियाँ दौलत से आंकी जायें !
कलियों को डँसकर विषधर मोटाया,
कौन इस विषधर की गदर्न दबाये !!
ऋषियों-मनीषियों के तप हुए मुश्किल
मारीच माया के जाल बिछाये !
राम औ' लक्ष्मण आँखों से ओझल
कौन इस ताड़का से राहत दिलाये !!

●●●

गिरगिट

गिरगिट को उदास देख
हम दुःखी हो जाते हैं ।
गिरगिट ने त्याग और ईमानदारी
की चादर ओढ़ ली है ।
वह सबके लिए सपने बेचता है,
हम सम्मोहित हो रहे हैं ।
गिरगिट ने टोपी पहन ली है,
हम जय-जयकार में जुटे हैं ।
गिरगिट के पास कुर्सी है,
हम थैली पहुँचा रहे हैं ।
गिरगिट माला-माल हो गया है,
हम पूंछ हिला रहे हैं ।
गिरगिट मुस्काता है,
हम नाचने लगते हैं ।
गिरगिट चैन की वंशी बजा रहा है,
हम दुःखड़ा सुनाना चाहते हैं,
वह पहचानने से इन्कार कर देता है,
हमारे सपने चूर-चूर हो जाते हैं ।
गिरगिट रंग बदलकर आया है,
हम फिर ठुमक रहे हैं ।

●●●

गेहुंअन

गेहुंअन कमाकर नहीं खाता,
दूसरे को निगल कर जीता है ।
बिल चूहा बनाता है,
चूहे का ही बनाया बिल
गेहुंअन का मकान हो जाता है ।
प्रकाश देखकर गेहुंअन छिप जाता है,
जबतक अंधकार है,
गेहुंअन का राज है ।
गेहुंअन चाहे लाख ललाट पर
खड़ाऊँ और चंदन लगाले
वह शिकार ही करेगा ।
शिकार गेहुंअन की प्रकृति है,
केंचुल बदल लेने से
गेहुंअन धामिन नहीं हो जाता ।
गेहुंअन से गेहुंअन का पोआ
ज्यादा खतरनाक होता है ।
गेहुंअन आखिर गेहुंअन है,
इतना सतर्क कि अण्डा भी निगल जाए ।
गेहुंअन को देखते ही लोग टूट पड़ते हैं,
पर गेहुंअन की आबादी खत्म नहीं हो सकी ।
गेहुंअन आज भी कुण्डली मारकर बैठा है,
गेहुंअन का बिखा उजाहना आसान नहीं,
क्योंकि गेहुंअन को दूध पिलाने वाले
फूल-माला लेकर खड़े हैं ।

•••

परिचय

नाम	: **मनोज कुमार**
पिता का नाम	: श्री बाबूचन्द सिंह
माता	: श्रीमती इन्दू सिंह
जन्म	: 12 जून, 1965
शिक्षा	: एम०ए० (इतिहास) एल०एल०बी०
प्रकाशन	: कादम्बिनी तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित
संपादन	: 'बिहार के कुर्मी' निर्देशिका का उपसंपादक, विभागीय पत्रिका तथा राष्ट्रीय विचार मंच की प्रकाशित स्मारिकाओं का सहा०-संपादक
आत्मकथ्य	: मेरी कविताएँ मेरी तन्हाइयों का दोस्त है । जिन्दगी में जो कुछ खोता हूँ उसे कविता के माध्यम से प्राप्त करना चाहता हूँ
सम्प्रति	: महालेखाकार (लेखा परीक्षा) । बिहार, पटना में व.लेखा परीक्षक के पद पर कार्यरत
संपर्क	: डी/10, आकाशवाणी कॉलोनी, छज्जूबाग, पटना-1 फोन: 233189

●●●

प्रश्न

एक है धर्म
सूरज का
धरती की
आकाश का
एक है मजहब
पानी का
पवन का
सुगंध का
तो फिर क्यों है,
अलग धर्म, अलग मजहब
आदमी का ?

रोटी

(चर्चित तंदूर हत्याकांड के बाद)

1

चुल्हे को,
माँ, बहन, पत्नी और बेटी
जलाती है,
और बनाती है रोटी
हम भी
जलाते हैं चुल्हे में
नारी को,
और पकाते हैं 'नैना' की बोटी

2

पहले जब रोटी खाता था
याद आती थी माँ की ममता
पत्नी के प्यार का बन्ध
आज जब रोटी खाता हूँ
आती है
किसी जली देह की गन्ध ।

अन्तर

1

कूड़े का ढेर
सामने आपके घर के
बेकाम समझ फेकते हैं
जिन्हें आप
पालता हूँ पेट
उनके सहारे मैं
'औ', मेरे माँ-बाप ।

2

बहुत फर्क है
शीतलहर औ' लू में
किन्तू समानता भी है एक
दोनों से ही,
मरते हैं गरीब ।

शहर

जहाँ,
सुबह शाम बरपा हो कहर
जहाँ,
सड़कों पर चलती हो भीड़ की लहर
जहाँ,
कानों में गुँजता हो हार्न का स्वर
जहाँ,
आदमी पीता हो धुएँ का जहर
जहाँ,
इंसानियत बन्द हो हर पहर
शायद
इसी का नाम है शहर

•••

जुलूस

कहाँ जायेगी यह जुलूस,
गाँधी मैदान से निकलकर,
जिन्दाबाद के नारों के साथ ?
अनगिनत पैर किन-किन सड़कों को नापेंगे
और मुट्ठियाँ कितनी बार तनेगी
अन्याय के खिलाफ ?
शायद यह जुलूस
आर० ब्लाक तक जाय
या फिर बेली रोड के
हड़ताली चौक पर रूके,
जहाँ सरकार रहेगी खड़ी
लोहे के फाटक के उस पार
हाथों में लाठी लेकर ।
जब अन्याय और भूख के खिलाफ
नारे लगाते उग्र हो जायगी जुलूस
तब शायद
सरकार की लाठी चलेगी
किसी नौजवान का सर फोड़ा जायगा
किसी बुजुर्ग के पैर टुटेंगे
कोई बच्चा कुचला जायगा
किसी औरत के पीठ पर
बाम उभर जायेगा लाठी से
अगले दिन
सत्ता और विपक्ष के
अरोप प्रत्यारोप के साथ
सारी बातें अखबारों की सुर्खियाँ बनेगी
सारा प्रांत और देश
उलझ जायेगा बहस में
और शायद एक और जुलूस की पृष्ठभूमि बने ।

कुछ शब्द चित्र : तुम्हारी यादें

1

मेरी जिंदगी
सर्दियों की ठिठुरी शाम ।
तुम्हारी यादें
सर्दियों की खिली सुबह ।

2

मेरी जिंदगी
तन्हा-तन्हा
तुम्हारी यादें
महफिल-महफिल

3

तुम्हारी यादों में
खोया मेरा मन ।
जैसे मैके की याद में खोई
ससुराल में नई दुल्हन ।

4

मेरी उदास जिंदगी में
तुम्हारा प्रेमपत्र ।
जैसे बेरोजगार की जिंदगी में
नियुक्ति पत्र ।

5

मेरी जिंदगी
सुपरफास्ट ट्रेन की तरह ।
तुम्हारी यादें
जंक्शन की तरह ।

•••

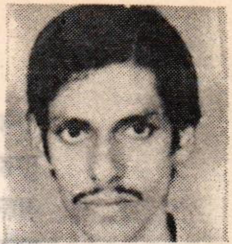

परिचय

नाम	:	**प्रभात कुमार धवन**
पिता का नाम	:	श्री अमर नाथ धवन
जन्म	:	17 अप्रैल, 1963 को पटना सिटी में ।
शिक्षा	:	बी०काम, पटना विश्वविद्यालय
प्रकाशन	:	कविता, निबन्ध, लघुकथा व अन्य पत्राचार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशित ।
प्रकाशनाधीन	:	बाल बगिया, इन्द्रधनुष, दहेज दानव, अभिव्यक्ति पाटलिपुत्र, भीम पौत्र बर्बरीक, तुम्हारी किस्मत, आचार्य रक्ताभ, मेरे पूर्वज
अभिरूचि	:	समाज सेवा, साहित्य सेवा, पत्रकारिता, अध्यात्मिक उन्नति, अच्छी पुस्तकों का संग्रह, सफाई ।
आत्मथ्य	:	अनेक अभावों, संघर्षों और व्याधियों के बीच यह जीवन नीरसता के सागर में डूब रहा था कि आत्मा की पुकार ने ही लेखन का रूप ले लिया ।
सम्प्रति	:	कार्यकारी सदस्य, पटना नगर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना सिटी ।
संपर्क	:	'धवन भवन' धर्मशाला घाट, चौक, पटना-800 008

•••

कर्मवीर

भोला भाला था तुम्हारा दिल,
प्रसाद समझ पी जाते विष ।
सिंह गर्जन से नहीं थें डरते,
'तोमर' कभी न द्वेष थे करते ।
शत-शत कृतियों के रचनाकार,
नमन तुम्हें कर्मवीर महान ।

तुम्हारी कविता

तुम्हारे पीछे
तुम्हारी कविता ही
अहसास दिलायेगी
तुम्हारे जिन्दा होने का
हम सबको ।
तुम्हारी कविता ही जान फूंकेगी
मुर्दों में
और मुर्दा उठा लेगा तलवार ।
तुम्हारी कविता ही
असत्य से सत्य की ओर
ले जायेगी हमें
और साम्राज्य आयेगा सतयुग का ।
तुम्हारी कविता ही
बहन बेटियों को सुरक्षा दिलवायेगी
और वे जी सकेंगी शान से ।
असुरों का नाश
और सुर साम्राज्य की स्थापना
तुम्हारी कविता से ही होगी ।
राम राज्य लाने में भी
तुम्हारी कविता कामयाब होगी ।
ओ कवि ?
तब तुम नहीं रहोगे
फिर भी तुम्हें जीवन देगी
तुम्हारी कविता
तुम्हे महान बनायेगी
तुम्हारी कविता
तुम्हें सम्मान दिलायेगी ।

●●●

जीव हिंसा

मानव ?
तू इतना महान न बन
दूसरों का भगवान न बन
मत बिगाड़ प्रकृति के सन्तुलन को
छोड़ अपने अत्याचारों को
कैदी पशु-पक्षियों को
जो सदियों से हमारी
सेवा कर रहे
हमें प्रफुल्लित कर रहे
जीभ की लोलुपता के कारण
बर्बर शोखों के लिये
अध्यात्मिकता का सहारा लेकर
हत्या करना
उन्हें कष्ट पहुँचाना
तुम्हारी सबसे बड़ी
कृतघ्नता है
तुम्हारी नासमझी है
अपनी नैतिकता का
पतन मत कर
मन बना अपना हृदय
कामी, क्रोधी, क्रुर, आलसी
मिटा दे नामों-निशां
अनीति, व्यभिचार, बलात्कार का
छोड़ दे इन शौखों को
दूर हो जा इन रास्तों से
बन जा अहिंसा का पुजारी
बना ले फूलों-सा जीवन
क्योंकि ये जीव भी
तुम्हारी ही तरह
विचरण करना चाहते हैं
निर्भय, स्वतन्त्र होकर
धरा और गगन के बीच ।

विधवा - सी तू

विधवा की तरह तू
हर तरह से उपेक्षित
तिरस्कृत ।
बचपन की चंचलता
आकर्षण
नहीं तुझमें, न वह स्वभाव ।
क्या नहीं झेलना पड़ा तुझे ?
सास के अंगारे
ससुर के तीर
ननद के कांटे
पति के नफरत
ससुराल के चारो
खंभों के बीच
खत्म हो गई
तेरी चंचलता
तेरा आकर्षण
तेरा स्वास्थ्य
तेरी खुशी ।
अब तू खोयी-खोयी सी रहती है
क्योंकि
सुहागिन होकर भी
विधवा - सी तू
अकेले ही रहती है,
और तेरे दिमाग में
ये वाक्य
आज भी गूँजते हैं
इतना कमाऊ पूत
और कुछ न लाये
बहू दहेज में ?

•••

परिचय

नाम : **राकेश प्रियदर्शी**

जन्म तिथि : 23 जनवरी, 1977

शिक्षा : बी॰ ए॰ (हिन्दी प्रतिष्ठा)

प्रकाशन : विभिन्न, पत्र- पत्रिकाओं में गीत, गजल कहानी, फिल्मी आलेख आदि प्रकाशित । आकाशवाणी, पटना से रचना प्रसारित ।

सम्प्रति : उपसम्पादक न्यूज इण्डिया (मासिक पत्रिका)

सम्मान : 'डा॰ अम्बेदकर फेलोशिप, से सम्मानित , महाकवि आरसी साहित्य परिषद् द्वारा 1965 में कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त ।

संपर्क : क्वार्टर सं॰ सी/11, रोड नं॰-3, पुनायचक, पटना-3

गज़ल

हर सक्श जाना-पहचाना लगता है ।
क्यों शहर तेरा अन्जाना लगता है ?
इक तुम थे, मेरे खास हमदम, साथी मेरे ।
तभी तो दिल मेरा, दिवाना लगता है ।।
थी आरजू कि संग उनके खुले मुकद्दर ।
हाथ मिलाके जाना सक्श बेगाना लगता है ।।
दर्द के पैमाने में, गम के भय छलक जाए ।
साकिया, तेरा नजराना, याराना लगता है ।।
पास उनके पहलू में बैठे, रूख हवा की गयी बदल ।
तब्बसुम का मौसम ये सुहाना लगता है ।।
आप आए हुजूर तो महफिल में आ गयी रौनक ।
यह जमीं, सितारों का आशियाना लगता है ।।

'अपवाद'

पत्थर का मुस्कराना, सिमटना और
दोस्ती, हवा से करना,
संग-संग मौज में उड़ना,
इस युग में अब अपवाद नहीं रहा।
हवा अब सिर्फ हवा नहीं रही,
धतूरे का बीज भी बन गया है हवा।
आप माने या न मानें,
कुछेक अंकुर के लिए जरूरी नहीं है हवा।
क्या चांद को हवा चाहिए ?
तारों को हवा चाहिए ?
सूरज को चमकने के लिए हवा चाहिए ?
क्या आप विशस करेंगे ?
कुछेक ऐसे भी फूल हैं इस काल में,
जिनकी पंखुड़ियां कांटे की हो गयी है ।
जिनसे बात कर सकते हैं, पाहूं
नहीं सकते, सहला नहीं सकते ।
हवा और फूल को गलत बताना,
अंकुर के लिए उचित नहीं है ।
पर कहा न, यहाँ क्या नहीं हो सकता ?
अंकुर का फूल से कोई वास्ता नहीं,
फिर भी चुभ जाता है फूल,
शूल की तरह अंकुर के सिने में।
सभी अंकुरों में ऐसी बात नहीं होती ।
पर, इस युग में कुछ भी असम्भव नहीं ।
यहाँ जो नहीं है, वह हो जाता है,
और जो है वह अपवाद हो सकता है ।
अपवाद सिर्फ नमूना का नाम नहीं रहा ।
फल अगर है तो उसका रस भी अपवाद
हो सकता है
अपवाद पर विवाद नहीं होगा, इस युग में ।

•••

'कविता अमर रहेगी'

नश्वर है शरीर,
मिट्टी में मिल जायेगी एक दिन ।
खिलेगा फिर नवपुष्प, हँसेगा, मुस्करायेगा,
और फिर मुरझाकर वही चला जायेगा,
मिट्टी में निष्प्राण होकर एक दिन ।
सारा मानव, सारे पेड़-पौधे मर जायेंगे, कट जायेंगे ।
बढ़ गयी जनसंख्या, फट जायेगी बैलून एक दिन ।
बढ़ गया प्रदूषण, गरीबी बढ़ रही है घोटालों की तरह ।
बढ़ती बेरोजगारी, घटती नैतिकता, ईमानदारी की तरह ।
ढोती रहेगी इनका भार पृथ्वी, आखिर कत तक !
आखिर कब तक ! कब तक ! आखिर कब तक !
एक दिन जल ही जल होगा ।
कोई नहीं होगा इसपर लिखनेवाला ।
क्या मर जायेगी कविता ?
नहीं ! नहीं ! कविता तो अमर है ।
नहीं मरेगी कविता, जिन्दा रहेगी हमेशा कविता ।
दूर गगन के तारों में, झिलमिल झिलमिलाती
रहेगी कविता सितारों में ।
चन्द्रमा की दुधिया चांदनी में, बलखाती, नहाती रहेगी कविता ।
अनन्तकाल तक, सूरज की किरणों संग-संग,
अठखेलियाँ करती रहेगी कविता ।
अंतरिक्ष के शून्य में, जहाँ हवा नहीं है,
विचरती रहेगी कविता । जीवित रहेगी बिना
ऑक्सीजन के ही ।
एक दिन, मंगल ग्रह पर होगी कविता ।
और वहाँ शायद पन्नों में भी उतर आए कविता ।
कविता तो सृष्टि की आत्मा है ।
सृष्टि भी नष्ट हो सकता है एक दिन ।
पर कविता आत्मा है, कभी नष्ट नहीं हो सकती ।
हाँ कविता अमर रहेगी, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में,
विचरण करती हुई, यत्र, तत्र, सर्वत्र !

•••

परिचय

नाम : **अरुण कुमार गौतम**

पिता का नाम : श्री ज्वाला प्रसाद

जन्म : 13 जून, 1970

शिक्षा : स्नातक

अभिरूचि : लेखन, गायन, अभिनय

प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ, पटना के दिल (गीत संग्रह), देश का दिल (हाइकू संग्रह) दिल का दर्द (व्यंग्य संग्रह), राधिका (मगही नाटक), कालचक्र (नाटक) शीघ्र प्रकाश्य ।

संपादन : तीसरी आँख, गणादेश, बौद्ध विहार एवं साहित्याकाश आदि पत्रिकाओं का सहायक संपादक के पद पर रहकर सम्पादन ।

आत्मकथ्य : मैं चाहता हूँ कि एक ऐसा समाज हो जिसमें न जाति धर्म की दीवार हो, न अमीर गरीब के बीच दूरी और न हो अंधविश्वास, बल्कि सभी समान भाव से रहें एवं सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में हाथ बटाएं ।

संपर्क : ग्राम-अराप, प्रखण्ड-बिक्रम, जिला-पटना-801104

फूल का दर्द

सुबह होता भी है
सूर्य की रोशनी पड़ते ही
बंद पंखुड़ियों से
मैं बाहर निकल आता हूँ
मुसकाता हूँ, हँसता हूँ
बहुत खुश होता हूँ
इस रंगीली दुनिया को
देखकर-निहारकर
मनुष्यों को मैं भाता हूँ
अच्छा लगता हूँ
सुन्दर दीखता हूँ

किन्तु शायद
मेरी सुन्दरता उनकी आँखों में
कांटों सी चुभती है
तभी तो वो
मुझे तोड़ लेते हैं
मेरी हत्या कर डालते हैं
पत्थर की मूर्तियों पर
चढ़ाने के लिए
या माला बनाकर
भ्रष्ट नेताओं अधिकारियों के
गले में पहनाने के लिए
जो मुझे नापसंद है ।
मैं खिला रहना चाहता हूँ
जैसे कोई मानव मरना नहीं चाहता
इस प्रदूषित वातावरण को
अपने सुगंध से
सुगंधित कर स्वच्छ रखूँ
किन्तु मेरा कोई दर्द
समझे तब तो
मैं जानता हूँ
दुष्ट मानव ऐसा नहीं समझेगा
मुझे देख मेरी हत्या करता ही रहेगा
मैं तो चाहता हूँ कि

दूषित माहौल

आप कहीं जा रहे हैं
और कोई अकारण ही
आप पर कुछ अपशब्द बोल दे
तो उसकी बातों में न उलझिए
आगे चलते जाइए
यह सोचते हुए कि
उसने आपको मारा तो नहीं ।

यदि आपको कोई पीट दे
तो सोचते बढ़िए कि
उसने आपका हाथ-पांव तो नहीं तोड़ा
यदि ऐसा कर दिया है
तो सोचिए कि
आपको जान से तो नहीं न मारा
आपको जिन्दा छोड़ दिया
उसने आप पर रहम किया
इस दुनिया को
और ऐसा कर
देखने और समझने का मौका दिया ।

मानवता का पुष्प

हरा भरा हो बाग मानव का, मानवता का पुष्प खिले ।
जाति धर्म का भेद न हो, एक दूजे से सब गले मिले ।।
बैर भाव क्यों हो आपस में
नहीं ऊँच कोई नीचा है
हिन्दुस्तानी एक समान सब
सबने मिल देश को सींचा है
अंधकार हो दूर मनों से, ज्ञान का जगमग दीप जले ।
प्यार करें टकरार नहीं, सबके दिल में प्रीत पले ।।
क्यों घृणा, नफरत हो क्यों
क्यों द्वेष, जलन हो क्यों
मानव होकर मानव का ही
करता कोई, दलन हो क्यों
जीयो और जीने दो, यह सद्विचार रहे ।
ढाये न जुल्मों-सितम, और न कोई सहे ।।
कदम बढ़ायें संग सभी हो
एक मति हो एक गति हो
कैसे दीप जलेगा जबतक
दीपक में न यदि बाती हो
मन मिले मिजाज मिले, एक हाथ से दूसरा हाथ मिले ।
फिर क्या न संभव हो, जब एक दूसरे का साथ मिले ।।

•••

परिचय

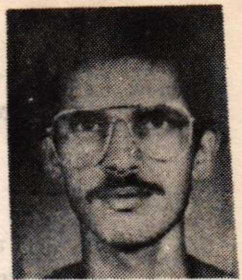

नाम	: **प्रभु नारायण दत्त ब्रह्मचारी**
पिता का नाम	: श्री विद्यानन्द प्र० मेहता
माता	: श्रीमती सुमित्रा देवी
जन्म	: 1 सितम्बर, 1968
शिक्षा	: ग्राम-अन्दौसी, पो०-समदा, जिला-सहरसा
शैक्षणिक योग्यता	: एम०ए० (इतिहास) एम०एस-सी० (रसायन शास्त्र)
सम्प्रति	: अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, पटना
अभिरूचि	: लेखन, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना, पुस्तक अध्ययन ।
सम्मान	: शांति कुंज हरिद्वार से "यज्ञवीर" की उपाधि
रचनाएँ	: बिहार की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय-समय पर गद्य-पद्य रचनाएँ प्रकाशित ।
आत्मथ्य	: विरासत में मिली सामाजिक मानसिकता से प्रेरित होकर समाज तथा देश के लिए कुछ कर सकने की तमन्ना ।
संपर्क	: 143, विधायक आवास, वीरचन्द पटेल पथ, पटना, ✆ 221319

पटेल गीत

हम लौह पुरूष पटेल के बेटे, तुम्हे जगाने आए हैं
जाग उठो भारत के वीरों तुम्हे जगाने आए हैं –
एक बनेंगे, नेक बनेंगे प्यार बढ़ाने आए हैं
लौह पुरूष पटेल की नीति, तुम्हें बताने आए है
हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा, यही बताने आए हैं
ऊँच-नीच और जाति-पाति का भेद मिटाने आए हैं
विश्व नीति को निर्मित करने नई प्रेरणा लाए हैं,
हर मानव में सद्‌भाव का दीप जलाने आए हैं
अत्याचार का अंत करेंगे, लोभ मिटाने आए हैं
भारत माँ के हम बेटे हैं तुम्हें जगाने आए हैं
नया-उजाला, नई रोशनी जग में लेकर आए हैं
को अनाचार के अंधकार जड़ से मिटाने आए हैं
जाग उठो भारत के बहनों तुम्हें जगाने आए हैं
जाग उठो भारत के बच्चों तुम्हे जगाने आए हैं ।

किसान

तुम्ही छउ कलियुग के भगवान हो किसान भाई
तोरे पर टिकल जहान-2
सर्दी गर्मी, बरसात बर्दाश्त करए छऽ
डटल रहए छऽ मैदान हो किसान भाई
तोड़े पर ------------------
जोते छऽ, कोड़े छऽ करे छऽ निकोनी,
उपजावे छऽ गेहूँ और धान हो किसान भाई
तोरे पर ----------------------
कपड़ा नहि बस्तर आधा पेट खाय के
कीचड़ में रोये छऽ धान हो किसान भाई
तोरे पर ----------------------
जे अणु गढ़ि विध्वंस वरेथ छेय
धन्य हुनक विज्ञान हो किसान भाई
तोरे पर टिकल -------------
अपना दूःखी रहि, सब के सुख देय छऽ
तेइयो कहलाबेय छऽ माटिक किसान हो किसान भाई
तोरे पर टिकल जहान-----------------

युग-युग से हम खोज रहे

युग-युग से हम खोज रहे सुर पुर के भगवान को
किंतु न खोजा अब तक हमने धरती के इन्सान को
चर्चा ब्रह्म ज्ञान की करते, किंतु तनिक न पाप से डरते,
राम नाम जपते हैं दुःख में, साथी हैं रावण के सूख में,
प्रतिमाएँ रचकर देवों की पूजा है पाषाण को
किंतु न पूजा अब तक हमने धरती के इंसान को
शवरी केवट के गुण गाएँ, खुब रीझकर ये अस्रु बहाएँ
पर जब हरि को भाग चढ़ाया, तब सब को दुत्कार भगाया
तिलक लगाकर अपने उर में पाला है शैतान को
किंतु न पाला अब तक हमने धरती के इंसान को
खोजे मंदिर-मस्जिद गिरजे, अनगिनत परमेश्वर सिरजे,
किंतु कमी ईमान न खोजा, और खेत-खलिहान न खोजा,
दुनियाँ के मेले में देखा नित्य नये सामान को
किंतु न देखा अब तक हमने धरती के इंसान को
खोजा हमने जिसे भजन में, छिपा रहा वह तो क्रन्दन में
हमने नित-दिन धर्म बसाना, किंतु कर्म नहीं पहचाना ...
पैसा पाया प्रतिभा पाई पाया है विज्ञान को
किंतु न पाया अब तक हमने धरती के इंसान को ।

•••

परिचय

नाम : **डा० गोपाल शरण सिंह**

पिता का नाम : स्व० महावीर सिंह

जन्म : 19 जनवरी, 1947

जन्म स्थान : ग्रा. गौश नगर, जिला - नालन्दा

शिक्षा : 1970 में एम.ए. (दर्शन शास्त्र), भागलपुर विश्वविद्यालय
1974 में एम.ए. (पाली), मगध विश्वविद्यालय
1984 में पीएच.डी., मगध विश्वविद्यालय

प्रकाशन : (1) नालन्दा (2) नालन्दा विश्वविद्यालय स्मृति ग्रंथ (3) नालन्दा चिल्ड्रेन डिक्सनरी (4) नालन्दा स्टूडेन्ट डिक्सनरी (5) बाल कविता संग्रह (6) महापुरूषों की जीवनी तथा दर्शन पर कई आलेख प्रकाशित ।

सम्प्रति : स्वतन्त्र रूप से सामाजिक तथा शैक्षिणक कार्यों में व्यस्त, नालन्दा में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए अनवरत प्रयासरत ।

संपर्क : शैक्षणिक विकास संस्थान, नालन्दा, जिला, नालन्दा-80311

बाल गीत

मेहनत का फल

एक थी पक्षी प्यास की मारी
चारो ओर से थी वह हारी
इतने में देखी एक कुटिया
जहाँ पड़ी थी एक सुराही
बुद्धि उसने तब दौड़ाई
चुनकर वह कंकड़ ले आई
जब पानी उपर को आया
उसने अपनी प्यास बुझाई
कहते -गोपाल' यह देखो भाई
मेहनत का फल पक्षी पाई ।

•••

भगवान बुद्ध

करीब पाँच सौ तीरसठ वर्ष ईसा-पूर्व की कहानी थी ।
कपिलवस्तु की नगरी में शाक्य की राजधानी थी ।
उस समय शुद्धीधन राजा राज्य करता था ।
प्रतिवर्ष आषाढ़ महोत्सव सात दिन मनाता था ।
महामाया भी पूर्णिमा को ठाठबाट से मनाती थी ।
प्रातः काल स्नानादि से निवृत हो दानादि करती थी ।
सम्पूर्ण दिन शुद्ध हो उपवास-ब्रत किया करती थी ।
संध्या-वन्दन के बाद पूर्ण चंद्र को देखा करती थी ।
उस रात भी शुद्धधन एवं महामाया क्रीड़ा-केलि में रत थे ।
दोनों आमोद-प्रमोद करते अर्द्ध-रात्रि को सो गये थे ।
निद्रावस्था में महामाया ने एक महान् स्वप्न देखा था ।
महाराजिक देवतागण महामाया के पास आये थे ।
हिमवन्त प्रदेश के एक शालवन में ले गये थे ।
देवताओं की देवियाँ उन्हें मानसरोवर ले गई थीं ।
स्नानादि, स्वच्छ वस्त्र, सुगन्धित तेल का लेप करायी थी ।
फूलां से खूब सजाया और भरपूर स्वागत किया था ।
सुमेध बोधिसत्व सफेद हाथी पर सवार होकर सूँढ़ में
श्वेत कमल मधुरगान के साथ महामाया की शय्या पर आये थे
तीन बार प्रदक्षिणा कर दाहिनी ओर से कुक्षि में प्रवेश किया था ।
अद्भूत घटना के बाद महामाया की नींद खुली थी ।
आषाढ़ी पूर्णिमा उत्तराषाढ़ मध्यरात्रि की बेला थी ।
इसी शुभघड़ी में बोधिसत्व ने गर्भ में प्रवेश किया था ।
सबेरे ही महामाया ने राजा से स्वप्न की बात बतलायी थी ।
आठ विद्वान ज्योतिषी को राजा ने बुलाया था ।
स्वागत, भोजनादि के बाद स्वप्न की बात बतलायी थी ।
मनन, गणन के बाद ज्योतिषियों ने स्वप्न सत्य बताया था ।
देवी ने पवित्र गर्भ धारण में पुत्र की प्राप्ति बतायी थी ।
वही अन्धकार का नाश कर प्रकाश देने वाला महामानव होगा ।
राजभवन में सभी जगह हर्षोल्लास मनाया गया था ।

•••

स्व० भोला प्र० सिंह 'तोमर'

तोमर स्मृति भाग

महामहिम राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा के साथ डा० तोमर, डा० भगवती शरण मिश्र, डा० शिवनारायण, कथाकार सतीश राज पुष्करण एवं उनके अन्य साथी ।

" हिन्दी जगत का प्यारा तोता, उड़ा आज सबको खला,
चुना साहित्यिक दानों को था, जो-जो उसको लगा भला,
मन के सपने मन में रख, इस दुनियाँ से विदा लिया,
हमलोगों के प्यारे साथी, तोमर अपना देश गया । "

कविवर स्व. भोला प्र. सिंह 'तोमर'

एक-परिचय

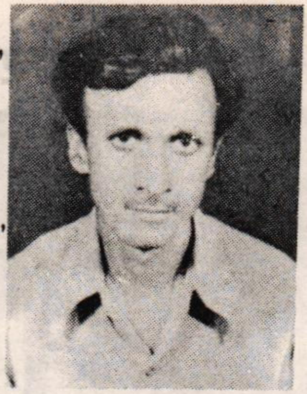

नाम : **भोला प्र० सिंह 'तोमर'**

पिता का नाम : स्व० दशरथ सिंह

माता : स्व० सुगावती देवी

पत्नी : श्रीमती भवानी तोमर

सुपुत्र : (1) संजय कुमार सिंह 'तोमर'
(2) राजीव कुमार
(3) संजीव कुमार

सुपुत्री : (1) सुश्री समता कुमारी

जन्म तिथि : 1 जनवरी, 1942

जन्म स्थान : ग्राम+पत्रा - धरहरा, तोमर टोला, जिला - मुँगेर

शिक्षा : डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरींग, बरारी, भागलपुर से 1960 में।

अभिरूचि : साहित्य-साधना एवं साहित्यिक संगठनों का संचालन ।

सेवा में प्रवेश : 1960 में कनीय अभियन्ता, प्रमण्डलीय आयुक्त,राँची कार्यालय।

प्रोन्नति : 1989 में सहायक अभियन्ता के पद पर गंगा परियोजना में।

अन्तिम पदस्थापन : सहायक अभियंता, ग्रा० अभि० संग०, रोसड़ा, समस्तीपुर

प्रकाशन : 1 पहली कविता 'मैं कवि अमर रहूँगा' जनक कवि रामप्रिय मिश्र 'लालधुआँ' के सम्पादकत्व में जमालपूर (मुंगेर) से प्रकाशित हिन्दी मासिक 'वीर बालक' में प्रकाशन ।

2. कविता, कहानी, परिचर्चा, लघुकथा, एकांकी, निबन्ध, भेंटवार्ता तथा रेडियो नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन ।

3. वीर बालक, राँची टाईम्स, राँची इक्सप्रेस, ग्राम निर्माण, न्यू मेसेज, आर्यावर्त, प्रदीप, विश्वमित्र, योजना, कादिम्बिनी, जनशक्ति, राष्ट्रीय धर्म, पहुँच भारती एवं उर्जा आलोक आदि पत्रिकाओं में रचनाएं निरन्तर प्रकाशित ।

4. आकाशवाणी, पटना इलाहाबाद, दिल्ली तथा राँची से सौ से अधिक कहानियों एवं नाटकों का प्रसारण ।

5. राँची टाईम्स, सरोवर, पहुंच, युवकधारा, चक्षुश्रवा, जागो बहन, जनशक्ति में साहित्य संयोजन तथा निर्माता निदेश का सम्पादन ।

साहित्यिक एवं सेवा संगठनों से लगाव	:	साहित्य संगम, (राँची) संस्कार (मुंगेर), साहित्य निष्ठा (पटना) राजेन्द्र साहित्य परिषद (पटना), साहित्यांचल (पटना), जह्नु विचार मंच तथा राष्ट्रीय विचार मंच जैसी साहित्यिक संस्थाओं का संचालन, अवर अभियंता संघ के पद पर आसीन।
सम्मान व पुरस्कार	:	बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ की राँची, डालटनगंज, चाईबासा तथा धनबाद द्वारा 1965 में सम्मानित, प्रयोगराज टाइम्स, इलाहाबाद द्वारा 1988 में 'मानव सेवा सम्मान' से सम्मानित, 1989 में गुलजार बाग, पटना, मुंगेर तथा बक्सर के साहित्यकार परिषद, द्वारा सम्मानित।
संपादकीय टिप्पणी	:	समतामूलक समाज की स्थापना के लिए चिन्तनशील एवं संघर्षशील, अपने उपर भरोसा रखने, दीन-हीन, दुर्बल असहायों और उदीयमान प्रतिभाशाली रचनाकारों की सेवा करने का भाव इनके कार्यकलापों में परिलक्षित, उदारहृदय, आत्मसम्मानी, कर्मठ और ध्येय के प्रति समर्पित, स्वतन्त्र प्रकृति के तोमर को सामाजिक एवं साहित्यिक हलचलों से निकट का संपर्क, सोच में जिजीविषा के दर्शन, चैतन्यपूर्ण और तेजस्वी जीवन पद्धति से परिपूर्ण एक कर्तव्य परायण हस्ताक्षर, मानसिक सजगता और सूक्ष्म तथ्यों को पकड़ने की अदभूत क्षमता, विलक्षण स्मरण शक्ति के सरल-सहल व्यक्तित्व, एक खरा सच्चा कर्मयोगी, जीवन की कठोरतम विपतियों को झेलने की शक्ति, अनुभव सम्पन्नता और व्यापक संपर्क, इनके प्रति समाज के हर तबके का आदर और सम्मान।

•••

बोलो, मेरे देशवासियो ?

बोलो, मेरे देशवासियों, यह पीड़ा क्या होगी कम ?
भारत के आँगन से, कब होगी दहेज की आग खतम ?
लिखा जयशंकर प्रसाद ने
नारी है श्रद्धा केवल
मनु ने भी बतलाया नारी
है नर के पथ का संबल
लिखा गुप्त ने शिक्षित नारी
जो चाहे कर सकती है
राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा –
नारी है एक सेतु, संबल
पूर्ण श्रृष्टि की जन्मदायिनी–भुगत रही गहरा मातम
भारत के आँगन से कब–होगी दहेज की आग खतम
देकर भारी भरकम दहेज
कर ब्याह पिता रूखसत करते–
लेकिन रिस्तों के चक्रव्यूह में–
घिर जाती आतंक बीच,
निष्ठुर हो जाते, पति, और तो सास हो जाती महानिर्मम !
भारत के आँगन से कब होगी, दहेज की आग खतम
कुछ और चाहिए वित्त मुझे
कुछ और चाहिए अलंकार,
कुछ और उपकरण मंगवाओ
कुछ दिलवाओ प्रेमोपहार,
जाती है बेटी, पिता सदन
बैरंग फिर वापस आती है !
कर मलते बूढ़ पिता उधर
बिटिया रोती है जार–जार
फिर आती रात अभागिन वह, आता है भाग्यहीन मौसम
भारत के आँगन से, कब होगी दहेज की आग खतम

कुछ तेल दहन-पोषण करते
कुछ-वतन अग्नि सुलगाते हैं,
फिर घेर-घेर-मजबूर बना-
जीवित ही उसे जलाते हैं !
चीखती-कराहती है, कन्या
पर कोई कृष्ण कहाँ आता ?
मरघट को जाते लिए लाश
तत्क्षण उसको दफनाते हैं ।
यों अनायास ही मिट जाता-उन अवला का जीवन का क्रम ।
बोलो मेरे देशवासियो, यह पीड़ा क्या होगी कम ।
भारत के आँगन से, कब होगी दहेज की आग खतम !

•••

मैं सचमुच बीमार हो गई

पोर-पोर में दर्द हो रहा-पीड़ा से बेजार हो गई
कुछ तो रहम करो अब प्रियतम-मैं सचमुच बीमार हो गई
आयी थी जब तेरे घर में, चंचल थी, निर्मल, उज्ज्वल थी
अंग-अंग में भरी चपलता-नाँच रही नंदना पल-पल थी
रक्त नहीं, शोले थे तन में-गंगा धारा सी कलकल थी
नांच रही थी, झूम रही थी, खेल रही बाला निश्छल थी
अब तो जिन्दा लाश बन गई-और जवानी रवार हो गई
कुछ तो रहम करो अब प्रियतम-मैं सचमुच बीमार हो गई
छः बच्चों की माँ कहलाई-लेकिन मेरी देह ढल गई
रिस-रिस रक्त बदन से निकले-मेरी जिन्दी जान जल गई
तारो सदृश चमकपूर्ण नयनों में अश्रुबूंद पल गई
अपने तन की सुन्दरता भी-मुझे हाय चुपचाप छल गई
गुलशन तो पहले थीं प्रियतम, अब तो मुल्क दयार हो गई
कुछ तो रहम करो अब प्रियतम, मैं सचमुच बीमार हो गई

•••

आओ पूजा करें, देश की उज्ज्वल माटी है

जीवन में मत घबराना-सुख-दुख की घाटी है
आओ पूजा करें, देश की उज्जवल माटी है।

भारत की महिला स्वर्ग से बढ़कर पावन है
भारत की माटी सुन्दर हँसता-सा सावन है।

देवी देवों के नमूनों में आकर्षक है, भावन है।
हीरे से भी अधिक दीप्त माटी का कण-कण है

इस माटी की छटा निराली यह तो बड़ी उपजाऊ है।
आओ पूजा करें, देश की उज्ज्वल माटी है

इस माटी में जन्म लिया जो, शेर हो गया
टकराने आया दुश्मन वह ढेर हो गया
इस मिट्टी में जब-जब भी अन्धेर हो गया है
सत्य धर्म के प्रतिपालन में फेर हो गया है।

राम आ अन्यायी की नाव उलाटी है।
आओ पूजा करे, देश की उज्ज्वल माटी है

जीवन-मरण, वस्त्र परिवर्तन, भारत की भाषा है।
वतन वास्ते मर मिटना जीवन की परिभाषा है।
भारत का मर मिटने की को वीर तमन्ना है
यह माटी है जहाँ, निराशा नहीं मात्र आशा है।

वक्षस्थल रण के सन्मुख अपनी परिपाटी है
आओ पूजा करें, देश की उज्ज्वल माटी है।

आओ माटी के कण-कण को हराभरा कर लें
आओ जीवन को नैसर्गिक और जरा कर लें
आओ चलकें खुशियों से, कपटहृदय हरा कर लें
आओ साथी सुख-वैभव से पूर्ण धरा कर लें
मिलकर जैसे हमने माँ की बेड़ी काटी है
आओ पूजा करें, देश की उज्ज्वल माटी है।

•••

सन्ध्या वसन्त की

चुभती है रह-रह कर सन्ध्या वसन्त की
बंध्या-सी आकांक्षा
परती से भाव हैं
पोर-पोर सिहरन है
अंग-अंग घाव हैं
गाथा तो अनकथ है–आदि और अंत की
चुभती है रह-रह कर सन्ध्या वसन्त की
षोडशी-सी कल्पना
वृद्धा-सी हो गई
मधुर प्रेम-भावना
श्रद्धा-सी हो गई
बन गई आराधना-साधना सी संत की
चुभती है रह-रह कर सन्ध्या वसन्त की
प्रतीक्षा की चादर भी
द्रौपदी की चीर हुई
स्मृति-सुधा भी आज
हृदतल पर तीर हुई
बिछुड़न की बेला है–सीमा अनन्त की
चुभती है रह-रह कर सन्ध्या वसन्त की
निराशा के निशा-मध्य
असंभव-सा आशा प्रात
धीरज की बाहों में
छाया है पक्षघात
विरड़-पीह, जैसे हो-वेदना असन्त की
चुभती है-रह-रह कर, सन्ध्या वसन्त की
सूख-सरिता शुष्क हुई
मृगतृष्णा रीत गई
आहों की रजनी भी
नयनों में बीत गई
असहम आज हो गई-याद सखि कंत की
चुभती है, रह-रह कर सन्ध्या वसंत की ।

•••

झंडा झुकने के पहले ही वीरो, बलिदान चढ़ा देना

आ गया पर्व आजादी का
खुशियों की घड़ी निकट आई
सारे अरमानों की दुनियाँ
झंडे के बीच सिमट आई

यह मेरे यश की यमुना है
मेरी मस्ती की गंगा है
लाखों जनों से बढ़कर भी
मेरा यह एक तिरंगा है

हिमगिरी के ऊँचे शिखरों में
सागर की अगम तराई में
अपना ध्वज लहरा देना है
नेफा की दुसह चढ़ाई में

कश्मीर और रामेश्वर तक
अपना प्रतीक लहराना है
हर घर के बड़े मुड़ेरे पर
झंडा अपना फहराना है

पर, भूल न जाना कहीं उन्हें,
जिनकी यह करूण कहानी है,
जिनके लोहू की कीमत पर
अपनी यह विजय निशानी है

यह आजादी की वर्षगांठ
सारे शहीद की साल-गिरह
आजादी दीप जलाने को
जो गए छोड़ कर मोह-विरह
सीने को खोल, बढ़े आगे

तोपों से तनिक न घबराए
सिंदूरी मांग रह गई खुली
वे लौट नहीं फिर घर आए

आजादी की कीमत आंको
जलियाना जैसे बांगों से
बेरहमी से लुट लिए गए
कितने सुकुमार सुहागों से

वारूद से झुलसे बच्चों से
तोपों से उड़े कलेजों से
आजादी की कीमत आंको
सारे शहीद की तेजों से

यह घास पात से बनी हुई,
राणा प्रताप की होती है
यह आजादी आजाद और
सरदार भगत की बोली है

अब भी मेजर शैतान सिंह
नेफा से हमें पुकार रहा
होशियार सिंह का त्याग हमें
मर मिटने को ललकार रहा

सीमा पर खड़े जवान आज
फिर अपनी याद दिलाते हैं
जिन्दगी–मौत के बीच खड़े
लोहू के दीए जलाते हैं

आजादी खतरे में है फिर
आवाज दे रहा देश तुम्हें
इस वर्षगांठ के अवसर पर
दे रहा यही संदेश तुम्हें

ध्वज को चोटी पर लहराकर
माता का मान बढ़ा देना
झंडा झुकने के पहले ही
वीरो ! बलिदान चढ़ा देना

•••

बेटी एक गरीब की

(1)

कन्या पिता हुआ करते है-सूरत एक सलीब की
बहुत अभागिन होती जग में-बेटी एक गरीब की

सुत-सदृश ही मातृ-अंक में
कन्या आगे बढ़ती है
लाड़-प्यार में, रस-दुलार में
यौवन देहरी चढ़ती है
ब्याह रचाने के खातिर
फिर जनक घूमते इधर-उधर
कभी गाँव की पगडंडी पर
कभी घूमते नगर-नगर

बार-बार वापस होते घर-काया ज्यों निर्जीव की
बहुत अभागिन होती घर में-बेटी एक गरीब की

(2)

पढ़ी-लिखी या हो अनपढ़
गौरवर्ण हो या काली
हो सौन्दर्यबती वाला
या साधारण सूरत वाली
केवल दहेज के दरवाजे
परिणय का मार्ग निकलता है
किसी दिशा की-किसी जगह की
भाग्य सभी को छलता है
धन के ऊँचे महल -मध्य-यह शिला सरीखी नीव
बहुत अभागिन होती जग में-बेटी एक गरीब की

(3)

डाँट झेलती है देवर की
और ननद का सहती कोप
सास-ससुर का रात-दिवस में
होते बार-बार आरोप

जीभ कतरनी-सी रखते हैं
पति देवता की संज्ञा
धैर्य लोप होता कन्या का –
खो देती है वह प्रज्ञा
राह ढूढ़ने लगती कन्या-मरने के तरकीब का
बहुत अभागिन होती जग में-बेटी एक गरीब की
सुनकर कन्या की दुख गाथा
जनक सोचते गहरा-सा
माता रहती मूक, भ्रातृ भी
गुमसुम रहते बहरा-सा
चाय बनाती है कन्या फिर
सेका करती है रोटी
जलती है फिर अग्नि-मध्य
झुलसा करती बोटी-बोटी
चाहे बहुत दूर की हो-या घटना बहुत करीब की ।
कन्या पिता हुआ करते हैं सूरत एक सलीब की ।
बहुत अभागिन होती जग में-बेटी एक गरीब की ।

•••

लेकिन बात न मानूँगी

(1)

कष्टों की, दुख-तकलीफों की, आए बारात न मानूँगी
संग-संग रह लूंगी साजन; लेकिन बात न मानूँगी
ऐसे झांक रहे हो मुझको,
जैसे वदन कुंवारी का
ऐसी लगन लगी है तेरी,
जैसे दाव जुआड़ी का
ऐसे छेड़ रहे हो मानो,
दिल कोई सुकुमारी का
ऐसे सोच रहे हो साजन,
चिन्तन हो व्यापारी का
हो मधुर प्रेम-आतुरता की ऐसी जबवात भी
संग-संग रह लूंगी साजन-लेकिन बात न मानूँगी

(2)

तेरे स्वागत में अर्पित,
प्रियतम नयनों की चंचल
तेरे ही खातिर सच बालम
यह मेरे तन भी. सुन्दर है
तेरे लिए समर्पित प्रियतम
दिल की सारी व्याकुलता
अरमानों की महफिल में,
तेरे स्वागत की आकुलता
भावुक से कामुक बने अगर-मैं, दिन या रात न मानूंगी
संग-संग रह लूंगी साजन-लेकिन बात न मानूंगी

(3)

सुख की शीतल सरिता में
दो सन्ताने नहलाती हैं
सरस बालक्रीड़ा दोनों के
दोनों को बहलाती है
दिल की कोमल परतों को
दो सन्तानें सहलाती हैं
उनके तन-मन की पीड़ा
मन को अतिशय दहलाती है
गहरी चिन्ता में हम डूबे-ऐसे हालात न मानूंगी
संग-सुग रह लूंगी साजन-लेकिन बात न मानूंगी

(4)

मैं हृदय जुड़ाकर लेलूँगी,
जितना उपहार मुझे दे दो
आँखों में उन्हें बसा लूंगी
तुम जितना प्यार मुझे दे दो
थोड़े में गुजर चला लूँगी
सीमित आधार मुझे दे दो
बस, दो नन्हीं संतानों का
रसमय परिवार मुझे दे दो
दो बच्चों से बढ़कर प्रियमत, लेकिन सौगात न चाहूँगी
कष्टों की दुखः-तकलीफों की आए बारात न मानूँगी
संग-संग रह लूंगी साजन-लेकिन बात न मानूँगी ।

•••

मंच : एक परिचय

राष्ट्रीय विचार मंच वैचारिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा सार्थक एवं सशक्त मंच है जिसके द्वारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक ताने-बाने से लेकर साहित्यिक सांस्कृतिक विषयों पर विचार गोष्ठी, परिसंवाद, परिचर्चा एवं काव्य-संन्ध्या का आयोजन कर ज्वलंत समस्याओं को निर्भीकता से विश्लेषण करता है । इस प्रकार विगत वर्षों से राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार, सामाजिक विभाजन, अपसंस्कृति के शोर-शाराबे तथा अनेक परिवर्तनों को मंच ने रेखांकित किया तथा आम जन-मानस को कुरेदकर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है ।

सामाजिक जीवन में और विशेषकर उपेक्षित वर्गों को सक्रिय एवं गतिशील बनाए रखने वाले कार्यक्रमों को यह मंच बढ़ावा देता है । राष्ट्रीय एकता की ताकतों को मजबूत करने हेतु यह मंच साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषायी एवं क्षेत्रीयता आदि से संबंध रखने वाले तत्वों का विरोध करता है । इसी को मद्देनजर रखते हुए मंच के वार्षिक कार्यक्रमों में देश के उन साहित्यकारों एवं प्रतिभाशाली रचनाकारों को सम्मानित करना शामिल है जिनकी रचनाओं में राष्ट्रीय एकीकरण, सामाजिक उन्नयन का उद्घोष उपलब्ध हो । इस प्रकार यह गैर राजनीतिक स्वैच्छिक संस्था अपने दायित्व को बखुबी समझकर राष्ट्र तथा समाज के समक्ष खड़ी चुनौतियाँ का मुकाबला करने का प्रयास कर रहा है । इसलिए मंच अब सिर्फ एक संस्था ही नहीं वरन् विचार-मंथन और आन्दोलन है, जड़, गतिहीन यथास्थिति के वर्चस्व के विरूद्ध एक दृष्टि भी है ।

मंच ने अबतक जो कुछ किया है, वह संभावनाओं की शुरूआत भर है, दरअसल जो लोग बने-बनाए रास्तों पर ही चलने के आदी हैं उन लोगों में रचनात्मक सक्रियता लाने का निरन्तर प्रयास मंच का चल रहा है । यह एक खुला मंच है जिसे अपने पर विश्वास है और जिसके कार्यक्रमों को सराहनेवाले सभी तबकों से आते हैं । क्योंकि मंच ने परम्परागत ढंग से चली आ रही गतिविधि से कुछ हटकर एक नए रास्ते की तलाश की है । इसलिए बहुत सचेत रूप से इसने अपने लिए साहित्य, संस्कृति, समाज एवं राजनीति का ही मैदान चुना है । मंच रचना और विचार को महत्व देने वाले प्रबुद्धजनों का एक विशाल परिवार है जिसके सदस्य देश के हर भाग में हैं । मंच के साधनों का अगर कोई एक सबसे बड़ा श्रोत है तो वह है उसके साथ जुड़े सर्जक, कलाकार, लेखक, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी, चिकित्सक, अभियन्ता, प्राध्यापक जिनका सहयोग हमेशा इसके कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में मिलता है । इसके बावजूद मंच का यह दावा नहीं कि वह जनांदोलन बन गया है पर इतना अवश्य है कि बीते वर्षों में मंच ने जनमानस को एक खास दिशा में मोड़ने की कोशिश की है । तो आइए आप भी इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन का एक हिस्सा बनें ।